₹ १००/- वार्षिक

दिव्य जीवन

नित्य सुख और परम शान्ति केवल भगवान् में ही प्राप्त किए जा सकते हैं। यही कारण है कि विचारवान्, बुद्धिमान्, जिज्ञासु तथा साधक ईश्वर-दर्शन और ब्रह्म-साक्षात्कार की चेष्टा करते हैं। ईश्वर का दर्शन हो जाने पर जन्म-मरण का चक्र तथा उसके सहकारी दुःखों का नाश हो जाता है। यह विश्व दीर्घकालीन स्वप्न के समान है। यह माया की बाजीगरी है। पाँचों इन्द्रियाँ मनुष्य को हर दम भ्रमित करती रहती हैं। अपनी आँखें खोलो। विवेक-बुद्धि से काम लो। ईश्वर के रहस्यों को समझो। भगवान् की सर्वव्यापकता की अनुभूति करो। सदा यही अनुभव करो कि वे आपके निकटतम हैं। वे आपकी हृदय-गुहा में सर्वदा विराजमान हैं।

स्वामी शिवानन्द

मार्च २०२३

विश्व–प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम–रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम–रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर–पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

ज्ञानियों के उपदेशों पर चलिए

जो मनुष्य दो खरगोशों के पीछे दौड़ता है, वह उनमें से एक को भी नहीं पकड़ पाता; इसी प्रकार वह ध्याता जो दो विरोधी विचारों के पीछे दौड़ता है, किसी एक भी विचार में सफल नहीं होता।

एक ही ईश्वरीय विचार को बनाये रखिए। हर हालत में उसी पर निष्ठा रखिए। अधिकाधिक शक्ति, बल तथा एकाग्रता के साथ उस विचार पर केन्द्रित रहिए। आप अवश्य ही सफल होंगे। चिन्तित न हों। मन के आदेशों पर न चलें। ज्ञानियों तथा सन्तों के आदेशानुसार कार्य कीजिए। महात्माओं के स्मरण मात्र से भौतिकवादी व्यक्तियों की नास्तिक प्रवृत्तियों का नाश होता है। उनमें मुक्ति अथवा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति की प्रेरणा तथा प्रवृत्ति का जागरण होता है।

स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन

Vol. XXXIII	मार्च २०२३	No. 12

प्रश्नोपनिषद्

तृतीयः प्रश्नः

तस्मै स होवाचातिप्रश्नान्पृच्छसि
ब्रह्मिष्ठोऽसीति तस्मात्तेऽहं ब्रवीमि ।।२ ।।

पिप्पलाद मुनि ने उनसे (कौसल्य से) कहा, ''आप अत्यधिक कठिन प्रश्न पूछते हैं। परन्तु आप श्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता हैं, अतः मैं आपके प्रश्नों के उत्तर देता हूँ।

शिवानन्दस्तोत्रपुष्पांजलिः

SIVANANDA-STOTRAPUSHPANJALI

PART–II

श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती

संसाररोगशमनाय जनाय नित्यं
कंसारिनामजपभेषजदानदीक्षम्
आसादितात्मबलमुत्तमयोगिवर्यं
शंसामि पुण्यचरितं शिवदेशिकेशम्।।१७।।

मैं भावपूर्वक गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की महिमा का गान करता हूँ जो भवरोग के नाश के लिए मनुष्यों को भगवन्नाम की दिव्य–औषधि देने में निरन्तर संलग्न हैं, जो भगवद्–दर्शन की प्राप्ति होने के कारण उच्च आध्यात्मिक शक्तियों से सुसम्पन्न हैं, जो योगीजनों में सर्वश्रेष्ठ हैं तथा जिनका जीवन–चरित अत्यन्त पावन है।

प्रालेयशैलभुवि नित्यनिवासलोलं
कालेयदोषशमनं कमनीयशीलम्
अलोकनीयसुषमं शिवदेशिकेन्द्रं
सालोक्यलाभविमलाशयमाश्रयेऽहम्।।१८।।

जिन्हें पर्वतराज हिमालय की तलहटी में वास करना अत्यन्त प्रिय है, जो कलिकाल के समस्त दोषों के नाशकर्ता हैं, जिनका चरित्र सुन्दर एवं उज्ज्वल है, जिनका दिव्यतेजोमय विग्रह दर्शनीय है तथा जिनका हृदय अत्यधिक पवित्र है, उन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरणकमलों का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

श्री रामनवमी सन्देश

रामराज्य

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

परम पुरुष भगवान् श्री राम को श्रद्धापूर्वक प्रणिपात, जिन्होंने मानवता को सदाचार का पथ दिखलाने हेतु इस धरा पर अवतार ग्रहण किया। पतिव्रता-शिरोमणि माता सीता को भावपूर्वक नमन, जिनका स्मरण मात्र ही मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करता है।

भगवान् श्री राम के विषय में विचार करते ही, आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व शान्ति एवं आनन्द से ओतप्रोत हो जाता है; यही शान्ति एवं आनन्द 'रामराज्य' की विशेषता है। इस सत्य को नहीं भूलें कि जिन भगवान् श्री राम ने आदर्श एवं परिपूर्ण मानव का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए अपनी लीलावशात् मानव रूप धारण किया, वे वास्तव में स्वयं परब्रह्म परमात्मा ही थे।

आपका भगवान् के प्रति कैसा भी भाव हो, यदि आप अनन्य रूप से केवल उनका ही सतत चिन्तन करते हैं, तो आपके लिए मोक्ष-प्राप्ति सुनिश्चित है। महर्षि नारद अपने भक्तिसूत्रों में इस सत्य का अत्यन्त स्पष्ट रूप में उल्लेख करते हैं। भगवान् के प्रति वैर-भक्ति भी उनके पावन चरणकमलों की प्राप्ति करा देती है क्योंकि भगवान् के प्रति गहरे द्वेष के कारण मनुष्य का मन सदैव उनके चिन्तन में इतना तन्मय रहता है कि वह सर्वत्र केवल उनको ही देखता रहता है (और यही भक्ति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है)। जब वैर-भक्ति भगवान् की प्राप्ति करा सकती है, तो उनके चरणकमलों में स्नेहपूरित भक्ति के विषय में क्या कहें! यह नि:सन्देह भक्त को शाश्वत आनन्द एवं परम शान्ति प्रदान करती है।

आप अपने भीतर रामराज्य की स्थापना करें; जब प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को एक चलते-फिरते रामराज्य के रूप में परिवर्तित कर देगा तो यह सम्पूर्ण विश्व एक विशाल रामराज्य बन जायेगा।

रामायण में रामराज्य के लिए आवश्यक तत्त्वों का अत्यन्त अद्भुत रूप में वर्णन किया गया है। सत्य, पवित्रता, बुराई पर विजय प्राप्त करने का अदम्य संकल्प, धर्म के प्रति अविचल श्रद्धा एवं निष्ठा, आज्ञाकारिता, सहनशीलता, सहानुभूति एवं प्रेम भगवान् श्री राम के सहज-स्वाभाविक गुण हैं। यदि इन दिव्य सद्गुणों का आपके हृदय में उदय हो जाए, तो आश्वस्त हो जाइये कि भगवान् श्री राम स्वयं आपके हृदय-सिंहासन पर विराजमान हो गये हैं। रामायण ऐसे सदुपदेशों से परिपूर्ण है जिन्हें प्रत्येक साधक को ग्रहण करना चाहिए और अपने जीवन में अभ्यास करना चाहिए।

भरत जी की भगवान् श्री राम के प्रति परमोच्च भक्ति तथा लक्ष्मण जी की भगवान् राम की अहर्निश सेवा का आकलन करना किसके लिए सम्भव है! वस्तुत: यह सम्भव नहीं है। आपके लिए हनुमान जी एवं लक्ष्मण जी सेवा के आदर्श उदाहरण होने चाहिए। भगवान् के प्रति परिपूर्ण समर्पण एवं नि:स्वार्थ भाव से, स्वयं को उनके हाथों का उपकरण मानते हुए उनकी ही इच्छा का पालन करना—यही कर्म द्वारा सफलता प्राप्ति का रहस्य है। जब आप अपना शरीर, मन, आत्मा भगवद्-चरणों में अर्पित कर देते हैं, और भगवान् के समक्ष आपका परिवार, मित्र-बन्धु और समस्त विश्व भी मूल्यहीन बन जाता है, केवल तभी आप परमानन्द प्राप्त करते हैं; आप आप्तकाम बन

'द डिवाइन लाइफ' १९४९ से उद्धृत सन्देश का अनुवाद

जाते हैं, क्योंकि आपने उसे प्राप्त कर लिया है जो प्राप्त करने योग्य है। अब आपको इच्छाएँ-वासनाएँ त्रस्त नहीं करती हैं। आपका भय, कायरता एवं अन्य बुराइयाँ भी समाप्त हो जाती हैं। आप चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं।

प्रत्येक स्त्री को अपने समक्ष माता सीता का आदर्श रखना चाहिए। एक स्त्री के लिए पातिव्रत्य धर्म ही वास्तविक धर्म है। उसे तपस्या, व्रत, उपासना, योग के अभ्यास की आवश्यकता नहीं है। वह केवल पातिव्रत्य धर्म के पालन से ही सरलतापूर्वक मोक्ष प्राप्त कर सकती है। एक पतिव्रता स्त्री की शक्ति असीम हो जाती है। देवतागण भी उसको नमन करते हैं, और पंच महाभूत उसके आदेशों का पालन करते हैं। हे फैशनपरस्त नारी! उस मार्ग पर न चलें जो आपको विनाश की ओर ले जाता है। माता सीता के आदर्श का अनुसरण करें। तब उनके समान आप भी चिरस्मरणीय बन जायेंगी।

रामराज्य सत्य पर आधारित था। धर्म इसकी सुदृढ़ नींव था। शास्त्र-सद्ग्रन्थ इसके पथप्रदर्शक थे। ऋषि, योगी, मुनि एवं ब्रह्मज्ञानी इसके प्रेरणापुञ्ज थे। इसमें वेदों का सम्मान किया जाता था और इसकी शिक्षाओं का पालन किया जाता था। इसलिए, रामराज्य स्थायी एवं सुसमृद्ध बन पाया। आज भी इसे शासन का सर्वाधिक आदर्श उदाहरण माना जाता है। विश्व के समस्त शासकों के लिए यह शिक्षा-स्वरूप है। यदि आप वास्तविक धर्म एवं शाश्वत सत्यों-सिद्धान्तों के आधार पर शासन की स्थापना करते हैं, तो यह आदर्श शासन होगा और प्रजा को भी शान्ति एवं समृद्धि की प्राप्ति होगी; परन्तु यदि आप भौतिकवाद की अस्थिर नींव पर शासन की स्थापना करेंगे, तो यह शीघ्र स्वयं धराशायी होगा और प्रजा का भी नाश करेगा। रामायण से शिक्षा ग्रहण करें। आपकी विकृत बुद्धि जिस मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है, उसे त्याग कर सद्मार्ग पर चलें।

भगवान् श्री राम के विपुल आशीर्वाद सब पर हों।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

ईश्वर सच्चिदानन्द (अस्तित्वपूर्ण, ज्ञानमय और केवलानन्द) है। ईश्वर सत्य है। ईश्वर प्रेम है। परमात्मा प्रकाशों का प्रकाश है। ईश्वर सर्वव्यापी चैतन्य है। ईश्वर ही वह सर्वव्यापी शक्ति है, जो इस ब्रह्माण्ड का संचालन करती है और इसको सुव्यवस्थित भी रखती है। वह (परमेश्वर) इस शरीर और मन का आन्तरिक शासक (अन्तर्यामी) है। वह सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है। वह तुम्हारे मन का मूक साक्षी है। वह सूत्रधार अर्थात् तुम्हारे जीवन की डोरी को धारण करने वाला है। वह सम्पूर्ण जगत् और सभी वेदों का योनिभूत कारण है। वही संकल्पों को प्रेरणा देता है। उसके छह गुण ज्ञान, वैराग्य, सौन्दर्य (माधुर्य), ऐश्वर्य, श्री और कीर्ति हैं। अतः वह भगवान् कहलाता है।

उसकी सत्ता भूत, वर्तमान और भविष्य में निरन्तर रहती है। जगत् की परिवर्तनशील घटनाओं के मध्य वही एक अपरिवर्तनशील और निर्विकार है। संसार की सभी नश्वर वस्तुओं के मध्य वही अविनश्वर है। वह नित्य, शाश्वत, अविनाशी, अव्यय और अक्षर है। उसने इस जगत् को अपनी लीला के लिए गुणत्रयसमायुक्त किया है। वह मायापति है।

स्वामी शिवानन्द

दिव्य आत्मन्,

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय।

सस्नेह प्रणाम।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि ११ जुलाई २०२३ परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि आराधना की ६० वीं वर्षगाँठ का पावन दिवस है। आज से ६० वर्ष पूर्व, श्रावण माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि, दिनांक १४ जुलाई १९६३ को, श्री गुरुदेव अपनी भौतिक देह का त्याग कर परमात्म-सत्ता में विलीन हुए थे।

हमारे संकीर्तन सम्राट् परम प्रिय गुरुदेव को महामन्त्र संकीर्तन अतीव प्रिय था। अत: मुख्यालय आश्रम ने उनकी पुण्यतिथि आराधना की ६० वीं वर्षगाँठ के पवित्र अवसर पर, उनके चरणकमलों में श्रद्धांजलि-स्वरूप दिनांक १२ मई से १० जुलाई २०२३ तक ६० दिवसीय अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन आयोजित करने का निश्चय किया है।

इस कार्यक्रम के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु हम डिवाइन लाइफ सोसायटी की विभिन्न शाखाओं से कीर्तन-समूहों को आमन्त्रित करना चाहेंगे जिनमें १० से १५ भक्त हों और जो ७ से १० दिन तक प्रतिदिन १२ घण्टे महामन्त्र संकीर्तन कर सकें। प्रत्येक घण्टे में समूह के ३ से ४ सदस्य कीर्तन में भाग ले सकते हैं। इस विषय में डिवाइन लाइफ सोसायटी की समस्त शाखाओं को पत्र भेजे जा चुके हैं।

श्री गुरुदेव की पावन स्मृति में हम अन्य उपयुक्त आध्यात्मिक एवं सेवा कार्यक्रम आयोजित करने के विषय में विचार कर रहे हैं। कार्यक्रमों के सुनिश्चित होने पर, उनके विषय में विस्तृत जानकारी शीघ्र प्रकाशित की जायेगी।

परमपिता परमात्मा एवं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के दिव्य अनुग्रह सब पर हों।

प्रेम एवं ॐ सहित

आपका एवं भगवद्-सेवा में

स्वामी योगस्वरूपानन्द

परमाध्यक्ष

भगवान् से केवल भगवान् को ही माँगें

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

आप सब जानते हैं कि भारतीय संस्कृति को वैदिक संस्कृति कहा जाता है तथा भारतीय इतिहास के प्रारम्भिक भाग को वैदिक काल अथवा वैदिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। 'वैदिक' शब्द नि:सन्देह उन चार महान् ग्रन्थों अर्थात् वेदों को इंगित करता है जिन्हें भारतीय इतिहास के आरम्भिक काल में संकलित किया गया था। वेदों में लौकिक, वैज्ञानिक एवं कलाविषयक ज्ञान समाहित है। आप सब यह भी जानते हैं कि समस्त ज्ञान की परिणति अथवा समापन, प्रज्ञा एवं विवेक में होता है। परन्तु यह प्रज्ञा एवं विवेक, जीवन के केवल प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ही प्राप्त किये जा सकते हैं, जीवन-विषयक ज्ञान एवं जानकारियाँ एकत्रित करके यह सम्भव नहीं है। जो व्यक्ति बौद्धिक ज्ञान रूपी बाधा को लाँघकर जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, वे ही प्रज्ञा-विवेक से सम्पन्न होते हैं। उपनिषद् नामक लघु ग्रन्थों में कुछ ऐसे ही प्रज्ञापूर्ण अनुभवों को हमारे लिए लिपिबद्ध एवं सुरक्षित रखा गया है। वैदिक काल के जीवन का 'परम अनुभव' ही उपनिषदों में प्रतिबिम्बित होता है।

उपनिषदों में जीवन के प्रति एक अद्वितीय दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है। यह अद्वितीय दृष्टिकोण क्या है? उपनिषदों में मानव-जीवन को स्वयं में ही एक साध्य नहीं माना गया है, अपितु इसे एक महान् लक्ष्य की प्राप्ति का साधन माना गया है, इसे परम लक्ष्य की प्राप्ति का सुनहरा अवसर माना गया है और यह परम लक्ष्य है—भगवद्-साक्षात्कार। मनुष्य का जीवन केवल तभी सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है, जब वह इस महान् लक्ष्य की ओर गतिशील होता है। इसके बिना जीवन अर्थहीन, मूल्यहीन, सारहीन एवं निरर्थक ही होता है।

जीवन का वास्तविक उद्देश्य भगवद्-साक्षात्कार करना है। क्योंकि भगवद्-साक्षात्कार आपको समस्त दु:ख-कष्ट से परे ले जाकर परम एवं अनिर्वचनीय शान्ति का अनुभव देता है और आपको भय, रोग एवं मृत्यु से भी मुक्त कर देता है। यह गहनतम अनुभव आपको भगवान् का सान्निध्य प्रदान करता है। किसी भी अन्य देश अथवा राष्ट्र में जायें; आपको भारतवर्ष के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर जीवन की ऐसी अवधारणा नहीं मिलेगी। जीवन के इस आध्यात्मिक लक्ष्य के प्रति जाग्रति आपको अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होगी। समस्त सन्त-महापुरुषों ने मनुष्यों को इस आध्यात्मिक लक्ष्य के प्रति जाग्रत करने हेतु पुन:-पुन: प्रयास किया है। जीसस क्राइस्ट ने भी ऐसा किया। भारतवर्ष में कई शताब्दियों से, भगवद्-साक्षात्कार प्राप्त नर-नारियों ने जनमानस का ध्यान, जीवन के इस परम लक्ष्य की ओर केन्द्रित करने के लिए अहर्निश प्रयास किया है। आज भी भारत के चारों कोनों में, इसके मन्दिरों, गुफाओं, घाटों में ऐसे महापुरुष निवास कर रहे हैं जो भगवान् के नित्य सान्निध्य में रहते हैं।

आज से लगभग २५० अथवा ३०० वर्ष पूर्व, भारत में ऐसे इतने अधिक सन्त एवं दिव्य पुरुष थे जिन्होंने इस परम आध्यात्मिक अनुभव को प्राप्त किया था और उनकी उच्च आध्यात्मिक तरंगों से सम्पूर्ण भारतभूमि

'द डिवाइन लाइफ' १९७७ में प्रकाशित आलेख का अनुवाद

परिव्याप्त थी। यह भारतीय इतिहास का सर्वाधिक अद्भुत काल था। उस समय आध्यात्मिक विषयों में जनमानस की पुन: रुचि जाग्रत हुई। मैं आपके समक्ष उन महान् सन्तों में से एक सन्त, तुकाराम जी के जीवन की कुछ घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करना चाहता हूँ।

सन्त तुकाराम एक छोटे से गाँव में रहते थे जहाँ लगभग २० से ३० घर थे। एक बार गाँव में भयंकर अकाल के कारण अनेक व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। इस त्रासदी से सन्त तुकाराम को यह अनुभव हुआ कि जीवन कितना अस्थायी, क्षणभंगुर एवं असत्य है, उनके हृदय में परम सत्य को जानने की तीव्र उत्कण्ठा जगी और उन्होंने शाश्वत परम तत्त्व की खोज प्रारम्भ कर दी। अब जीवन के सुख-भोग आदि उनके लिए भयकारक बन गये। वे प्रतिदिन गाँव से दूर किसी पहाड़ी पर चले जाते थे और जीवन की नश्वरता, वस्तुओं की क्षणभंगुरता का चिन्तन करते थे और भगवान् से सतत प्रार्थना किया करते थे। इस प्रकार उनके आध्यात्मिक जीवन में शनै:-शनै: प्रगति होती गयी। उन्हें अनेक दिव्य अनुभव प्राप्त हुए और अन्तत: उनकी सच्ची एवं गहन श्रद्धा-भक्ति के फलस्वरूप उन्हें भगवान् के दर्शन हुए। उन पर भगवद्-कृपा की वृष्टि हुई। सन्त तुकाराम विद्वान् नहीं थे; उनके पास एम. ए. अथवा पी. एच. डी. की उपाधि भी नहीं थी। परन्तु उन्हें प्रतिक्षण भगवद्-अनुग्रह प्राप्त था। भगवान् की प्रेरणा से उनके हृदय से सुन्दर गीत-अभंग मुखरित होने लगे। उन्होंने इन्हें लिखना प्रारम्भ किया और शीघ्र ही रचनाओं का अम्बार लग गया। उनकी इन भावपूर्ण सुन्दर अभंगों में वैदिक ज्ञान का सारतत्त्व निहित है। उनमें ऐसा गूढ़ ज्ञान समाहित है कि उन्हें आज के महाविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित किया गया है और विद्वज्जन एवं स्नातक विद्यार्थी उन रचनाओं की व्याख्या-विश्लेषण करते हैं।

अन्ततोगत्वा, वह समय भी आया जब सन्त तुकाराम अपनी छोटी दुकान एवं व्यवसाय को सँभालने में सर्वथा असमर्थ हो गये। सांसारिक कार्यों-कर्तव्यों को करना उनके लिए असम्भव सा हो गया। प्रथम पत्नी के देहावसान के बाद उनके परिवार ने उन्हें दूसरे विवाह के लिए विवश किया था। उनकी दूसरी पत्नी अत्यन्त कटु एवं कर्कश स्वभाव की स्त्री थी। विनयशील एवं सौम्य स्वभाव के सन्त तुकाराम, उनके इस स्वभाव एवं व्यवहार को चुपचाप सहन करते थे। उनकी पत्नी की धन, व्यवसाय तथा घर-गृहस्थी के कार्यों में अधिक रुचि थी। जब उसने देखा कि तुकाराम जी की इन सबमें कोई रुचि नहीं है, तो उसने तुकाराम जी को बहुत खरी-खोटी सुनायी। वह बहुत कठोरहृदया थी। उसमें वे सब लक्षण थे जो हिन्दू शास्त्रों के अनुसार एक पत्नी में नहीं होने चाहिए। वह कभी-कभी रोते-रोते तुकाराम जी से कहती थी, ''जब तुम मेरे और बच्चों के लिए जीविकोपार्जन नहीं करना चाहते, तो मुझसे विवाह क्यों किया?''

एक बार ऐसा हुआ कि घर में भोजन के लिए कुछ सामग्री नहीं बची क्योंकि तुकाराम जी कई दिनों से दुकान पर नहीं गये थे। वे किसी पहाड़ी पर एकान्तवास कर रहे थे। उनकी पत्नी ने उनके नीचे आने की बहुत प्रतीक्षा की, परन्तु वे नहीं आये। अन्तत:, वह स्वयं ही उनकी खोज में पहाड़ी पर चढ़ी। जब उसे तुकाराम जी मिल गये, तो वह उन्हें घसीटते हुए नीचे लाने लगी और कहने लगी, ''अब तुम्हें काम करना ही होगा। चाहे तुम लकड़ी काटो, लोगों के घरों के छप्पर बनाओ अथवा अन्य कोई कार्य करो। रात्रि तक, तुम्हें कुछ धन का अर्जन करके घर लाना होगा ताकि मैं बच्चों को भोजन करवा सकूँ।'' इसलिए तुकाराम जी कार्य की खोज में निकल पड़े। परन्तु गाँव में वे

एक भक्त-साधक के रूप में विख्यात थे, इसलिए जब वे किसी नौकरी की तलाश कर रहे थे, तो उनका उपहास किया गया। अन्त में, एक वृद्ध किसान उन्हें कार्य देने को सहमत हो गया। उसने कहा, ''मेरे खेत में फसल पक चुकी है। यह कटाई के लिए तैयार है। खेत के बीच में एक ऊँचा स्थान बना हुआ है। वहाँ बैठ जाओ और फसल की देखभाल करो। पक्षियों को भगाओ।'' इसलिए तुकाराम जी खेत में गये और ऊँचे स्थान पर बैठ गये। उन्होंने देखा कि जहाँ तक उनकी दृष्टि जा रही थी, वहाँ तक वायु में लहलहाती फसल ही थी और ऊपर आकाश में प्रसन्नता से परिपूर्ण पक्षियों का झुण्ड उड़ रहा था। पक्षियों की प्रफुल्लता देखकर उन्होंने अपना छोटा तम्बूरा उठाया। उनके हृदय से स्वत: ही यह गीत स्फुरित होने लगा, ''(आदि बीज एकला)...क्या इस एक बीज के समान वह एकमेव अद्वितीय तत्त्व अनेक नहीं बन जाता है? प्रारम्भ में इस धरती पर केवल एक बीज ही बोया गया था और उसमें से एक धान की बाली निकली। परन्तु उसमें सैकड़ों बीज थे। फिर उन सैकड़ों बीजों को बोया गया। उनसे जो धान की बालियाँ उत्पन्न हुईं, उन सबमें भी सैकड़ों बीज थे। इस प्रकार वह एक बीज ही सहस्र, दशसहस्र और शतसहस्र रूप लेता गया। कितना महान् आश्चर्य है? जिस प्रकार यह सम्पूर्ण फसल उस एक बीज से उत्पन्न हुई है, उसी प्रकार यह विशाल सृष्टि एक ब्रह्म-तत्त्व से ही प्रकट हुई है। वही एक परब्रह्म तत्त्व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को व्याप्त किये हुए विराजमान है। इन असंख्य नामरूपों के होते हुए भी वस्तुत: सारतत्त्व एक ही है।'' इस प्रकार भगवान् के प्रति गहन प्रेम भाव से परिपूरित होते हुए तुकाराम जी रोते हुए प्रार्थना करने लगे, ''हे मेरे प्रिय प्रभु! आपका सुन्दर स्वरूप कभी मेरी दृष्टि से ओझल न हो। आपका यह स्वरूप अत्यन्त मनोहारी है। मैं सदैव इसके दर्शन करता रहूँ; परन्तु प्रभु, आपके इस सुन्दर रूप से अधिक सुन्दर एवं मधुर आपका नाम है। आपका यह मधुर नाम सदैव मेरे हृदय में गुंजायमान होता रहे। मुझे एक क्षण के लिए भी आपका नाम विस्मृत न हो।'' फिर उन्होंने आगे कहा, ''हे प्रभु! मैं आपसे एक वरदान माँगता हूँ कि मेरी आपके चरणकमलों में भक्ति सदैव बनी रहे। इसके अतिरिक्त, मैं आपसे अन्य कुछ नहीं माँगता हूँ। आपकी भक्ति में समस्त सुख एवं आनन्द का वास है।''

अनेक सन्त जनों ने यही बात कही है, ''हे मानव, जब तुम अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड के स्वामी के समक्ष खड़े होते हो, तो उनसे संसार की तुच्छ एवं क्षुद्र वस्तुओं को मत माँगो। भगवान् से कुछ माँगना ही है, तो भगवान् से भगवान् को ही माँगो। उनके प्राप्त हो जाने पर तुम्हें सब प्राप्त हो जायेगा; क्योंकि वे इस अखिल सृष्टि की आत्मा हैं। वे ही सब-कुछ हैं।''

ऐसा कहा जाता है कि एक बार भगवान् ने अपने परम भक्त महर्षि नारद से कहा, ''हे नारद! मैं तुम्हारी भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें कुछ वर देना चाहता हूँ। इसलिए कुछ माँगो।'' नारद जी ने उत्तर दिया, ''प्रभु, आप मुझे क्या माँगने के लिए कहते हैं? मेरी समस्त इच्छाएँ समाप्त हो गयी हैं। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरा आपके प्रति अनन्य प्रेम है। यही मेरा महानतम सौभाग्य है। मुझे अन्य कोई वर नहीं चाहिए।'' परन्तु भगवान् ने पुन: आग्रह किया। इसलिए नारद जी ने कहा, ''यदि आप आग्रह करते हैं, तो मैं यह एक ही विनती करूँगा कि मेरी आपके चरणकमलों के प्रति भक्ति अक्षुण्ण बनी रहे।''

अपने एक अन्य महान् भक्त प्रह्लाद से भी भगवान् ने वर माँगने के लिए कहा था, तो प्रह्लाद ने कहा, ''प्रभु, आप

मुझे किसी कामना को रखने की बात क्यों कह रहे हैं? मैंने जीवनपर्यन्त यही प्रार्थना की है कि मेरे हृदय में कभी कोई इच्छा-कामना न रहे। मैंने उनके समूल नाश के लिए यथासम्भव प्रयास किया है। आप मुझे कामनाओं के पाश में बाँधने का प्रयत्न क्यों कर रहे हैं? हे भगवन्! आप मुझे प्रलोभित क्यों कर रहे हैं?'' परन्तु भगवान् ने पुन: आग्रह किया। इसलिए प्रह्लाद ने कहा, ''ठीक है प्रभु! आप पुन: आग्रह कर रहे हैं तो मैं माँगता हूँ। मुझे राज्य, सिंहासन अथवा स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा नहीं है। मेरी यही एक प्रार्थना है कि समस्त प्राणियों के दु:ख-कष्ट दूर हो जायें। सभी सुखी हो जायें, रोग एवं पीड़ा से मुक्त हो जायें।''

जिस हृदय में भगवद्-प्रेम का वास होता है, वहाँ सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए भी असीम प्रेम भरा होता है। जब आप परमपिता परमात्मा से प्रेम करते हैं, तो आप समस्त प्राणियों से प्रेम किये बिना रह नहीं सकते हैं। जिस हृदय में भगवान् के प्रति प्रेम है, उस हृदय में वैश्विक-प्रेम सहज ही प्रकट होता है।

आज, मैंने उस आवरण को थोड़ा सा हटाने का प्रयास किया है जिसने पाश्चात्य जगत् से भारत के वास्तविक जीवन को छिपा रखा है। आध्यात्मिक भारत, भगवद्-साक्षात्कार एवं निष्काम प्रेम-भक्ति का प्रतीक है। इस क्षण भी, भारत के आध्यात्मिक इतिहास में ये दो आदर्श, धरोहर स्वरूप हैं। आने वाले समय में भी, यह पावन भूमि सन्त तुकाराम एवं चैतन्य महाप्रभु जैसे महान् सन्तों को जन्म देती रहे। ये भारतभूमि के सच्चे पुत्र हैं, इन महापुरुषों में ही भारत के दोनों महान् आध्यात्मिक आदर्श प्रतिबिम्बित हुए हैं।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

यदि आप बिना किसी आन्तरिक भाव के ही कहें, ''मैं तेरा हूँ, हे प्रभु!'' तो इसे पूर्ण आत्मार्पण नहीं कहते। आपके हृदय के अन्तरतम से यह आवाज आनी चाहिए। आपको आमूल परिवर्तन के लिए तैयार रहना चाहिए। आपको अपनी पुरानी आदतों तथा प्रवृत्तियों में आसक्त नहीं रहना चाहिए। आपको ऐसी आशा नहीं रखनी चाहिए कि आपके इच्छानुसार ही सब-कुछ हो। ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही आपको जीवित रहना चाहिए। ईश्वरीय कृपा अथवा शक्ति को स्वार्थ-साधना में लगाने का विचार न कीजिए। अहंकार तरह-तरह के रूप धारण करेगा तथा पुरानी आदतों और प्रवृत्तियों का त्याग न कर ईश्वर से सब-कुछ प्राप्त करना चाहेगा। यही कारण है कि साधक आध्यात्मिक मार्ग में कई वर्ष की साधना के बाद भी ठोस उन्नति नहीं कर पाते।

आत्मार्पण में कोई क्षति नहीं है। आप ईश्वर से सब-कुछ प्राप्त कर लेंगे। आप ईश्वर के सभी ऐश्वर्यों का भोग करेंगे। ईश्वर की सारी सम्पत्ति आपकी हो जायेगी। सिद्धियाँ तथा ऋद्धियाँ आपके चरणों में लोटने लगेंगी। आप ईश्वर से एक बन जायेंगे। आप सभी कामनाओं, इच्छाओं तथा तृष्णाओं से मुक्त बन जायेंगे। सच्चा साधक अपने शरीर, जीवन, मन तथा आत्मा को ईश्वर के पाद-पद्मों पर चढ़ा देने के लिए सदा तैयार रहता है।

स्वामी शिवानन्द

तिरेसठ नयनार सन्त :

तिरुमूल नयनार

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

तिरुमूल नयनार शिवसिद्ध थे। तिरुनन्दी देवर के उन आठ शिष्यों में से एक थे जिन पर उन्होंने कृपावृष्टि की थी। वे सभी योगी थे। वह तिरुमूलर कहलाये, क्योंकि वे मूलन की भौतिक देह में प्रवेश कर गये थे।

तिरुमूलर की इच्छा हुई कि वे पोतिया पर्वत पर जा कर अगस्त्य ऋषि के दर्शन करें। इसलिए वे कैलाश को छोड़ कर दक्षिण की ओर चल दिये। मार्ग में उन्होंने अनेकों शैव मन्दिरों के दर्शन किये। जब वे तिरुवावादुथुरै आये, उन्होंने कावेरी नदी में स्नान किया और मन्दिर में चले गये। उन्होंने दो परिक्रमाएँ कीं और भगवान् को प्रार्थनाएँ समर्पित कीं। जब वे कावेरी के तट के साथ-साथ चल रहे थे, उन्होंने गायों का एक झुण्ड देखा जिसमें सभी गायों के नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हो रहे थे। उन्होंने इसका कारण खोजने का प्रयास किया तो देखा कि एक ग्वाले का मृत शरीर वहाँ पड़ा हुआ है। वे अपनी देह को एक वृक्ष के तने में सुरक्षित रख कर उस ग्वाले की मृत देह में प्रविष्ट हो गये। गायें पुनः प्रसन्न हो गयीं। इस ग्वाले का नाम मूलन था और यह सत्तनूर का रहने वाला था। सायंकाल में मूलन गायों को गाँव में लौटा लाया। मूलन की पत्नी व्याकुलता सहित अपने पति के घर लौटने की प्रतीक्षा में थी। किन्तु जब वह उस दिन उनके निकट आयी तो उन्होंने उसे स्वयं को स्पर्श नहीं करने दिया और कहा, ''ओ भद्र महिला, मैं आपका पति नहीं हूँ। भगवान् शिव की उपासना करो और मोक्ष प्राप्त करो।'' यह कह कर वे उसे छोड़ कर निकट के एक मठ में चले गये।

उस स्त्री ने वहाँ के मुखियाओं से अपने पति के व्यवहार के विषय में शिकायत की। उन्होंने मूलन का परीक्षण किया और इस परिणाम पर पहुँचे कि वह आध्यात्मिक विकास के उत्कर्ष पर पहुँच चुका है। अतः उन्होंने उस स्त्री से कहा कि वह उसे एकाकी छोड़ दे। आगामी दिन, तिरुमूल गायों के पीछे गये; किन्तु जिस वृक्ष में उन्होंने अपनी देह रखी थी, वह वहाँ नहीं थी। यह सब भगवान् की लीला थी। भगवान् शिव चाहते थे कि तिरुमूलर शैव दर्शन पर तमिल भाषा में एक पुस्तक की रचना करें जिसमें समस्त शिव आगमों का सार हो। तिरुमूलर भगवान् की इस इच्छा को समझ गये और तिरुवावादुथुरै लौट आये। उन्होंने भगवान् की आराधना की और निकट के एक पीपल के वृक्ष के नीचे गहन समाधि में बैठ गये। वे तीन सहस्र वर्षों पर्यन्त समाधि में लीन रहे। किन्तु प्रत्येक वर्ष, वे समाधि से बाहर आते और एक पद्य की रचना करते, इस प्रकार उन्होंने तीन सहस्र वर्षों में कुल तीन सहस्र पद्यों की रचना की। इस ग्रन्थ को तिरुमन्दिरम् कहा गया।

इस प्रकार भगवान् का उद्देश्य पूर्ण हो गया। तब तिरुमूलर वापस कैलाश चले गये।

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

आपका शान्ति-दूत :

अन्धकार में प्रकाश

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

(पूर्व-अंक से आगे)

मानव की वास्तविक दशा

आज के इस आधुनिक युग में मानव-जाति की वास्तविक दशा कैसी है? आज अनेकों महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हैं, असंख्य पुस्तकों के विशाल पुस्तकालय हैं। अधिकांश विकसित देशों में निन्यानवे प्रतिशत लोग शिक्षित हैं। मानव के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में ज्ञान और विकास का प्रस्फोटन हो रहा है, जिसके अन्तर्गत इलेक्ट्रोनिक, भौतिकी एवं रासायनिकी में अद्भुत विकास देखने को मिलता है। मनुष्य आज अपने सुसंस्कृत और सुसभ्य होने पर स्वयं पर गौरवान्वित होता है और पाषाण युग के अपने पूर्वजों को अपने से तुच्छ समझते हुए, उनके सम्बन्ध में बात करता है, तथापि एक बार पुनः आधुनिक समाज को हम एक अन्य दृष्टिकोण से देखते हैं। विज्ञान, संस्कृति और सभ्यता में दिखायी देती हुई इस उन्नति के साथ-साथ कुछ और भी है जो अत्यन्त भयावह है। जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि मानव-समाज में यद्यपि घृणा, हिंसा एवं युद्ध सदा से ही विद्यमान हैं, किन्तु फिर भी तब क्षति पहुँचाने की क्षमता अपेक्षाकृत सीमित थी।

आज, उसके इस विस्तृत ज्ञान के कारण आधुनिक मानव ने विनाश सम्बन्धी विज्ञान के उपयोग के विषय में परिपूर्ण रूप से ज्ञान अर्जित कर लिया है। अब उसमें समस्त मानव-जाति का सर्वनाश कर देने की क्षमता आ गयी है। उसने स्वयं को उन हथियारों से सुसज्जित कर लिया है जिनके उपयोग से वह समस्त विश्व का विध्वंस कर सकता है अथवा उसे रहने के लिए अयोग्य बना सकता है। इस धरती को क्षण-भर में निर्जीव, ऊसर बना दिया जा सकता है। ऐसा बताते हैं कि आज के मानव की संसार को विनष्ट कर देने की क्षमता बीस गुणा अधिक बढ़ गयी है। क्या यह बुद्धिमत्ता है, या पागलपन है? यदि यह उन्नति है, तो क्या हम वास्तव में ऐसी ही उन्नति चाहते हैं? मनुष्य स्वयं को कैसे और क्यों इस वर्तमान दुःखद स्थिति में ले आया है? हममें से कितने हैं जो आज इन प्रश्नों के सम्बन्ध में विचार करते हैं?

प्रसन्नता और शान्ति को प्राप्त करने के सर्वोच्च प्रयत्न करने के उपरान्त भी मानव असफल हो गया है। और आज, मानो यह असफलता उसके लिए पर्याप्त नहीं हो, मनुष्य अपनी ही मानव-जाति की भलाई का ही नाशक और अकल्पनीय कष्टों, पीड़ाओं और विनाश का स्रष्टा बन गया है। इन तथ्यों के सामने, क्या हमारी मानवीय धरोहर में कुछ ऐसा है जिसमें इसका समाधान हो? एक कहावत है, ''जब तक साँस, तब तक आस।'' जिनको भगवान् पर भरोसा है, वह कभी आशा नहीं छोड़ते। ईसाई धर्म के मूल सिद्धान्तों में से एक मुख्य सिद्धान्त है कि मनुष्य आशा के सहारे जीता है। विश्वास, आशा और दान—इन तीन सद्गुणों का ईसाई धर्म में बहुत प्रचार किया गया है। जब आपको भगवान् पर विश्वास हो, आपके जीवन में आशा रहती है और जब आपमें आशा होती है तो आप समस्त मानव-जाति के प्रति दयालु एवं करुणापूर्ण होते हैं। निराशा मनुष्य को पशुत्व की ओर ले जाती है, किन्तु जीवन में आशावादी होने से दान सम्भव है।

मनुष्य शारीरिक अथवा मानसिक रूप से नहीं, अपितु आध्यात्मिक रूप से परमात्मा का अंश है। सत्य

आपकी वास्तविक पहचान है, और आप उस परम सत्ता के अंश हैं जो स्वयं में परिपूर्ण सर्वोच्च सत्ता है। भगवान् को प्रेम, करुणा, ज्ञान और आनन्द के सागर के रूप में अनुभव किया और माना गया है। आपके निज स्वरूप के भी यही वास्तविक गुण हैं। प्रत्येक मनुष्य में इन दिव्य गुणों को अभिव्यक्त करने की क्षमता निहित है। इन क्षमताओं को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से जीवन जीना ही वास्तव में उपयुक्त साधना है और जीवन जीने की कला एवं विज्ञान भी है। अपने इस वास्तविक स्वरूप के सत्य को पहचानने में, और अपने जीवन को आन्तरिक जागरूकता की एक प्रक्रिया बनाने में असफलता ने मानव को इस अन्धकारपूर्ण अवस्था में पहुँचा दिया है।

मानव के इतिहास में अन्य किसी भी समय से बढ़ कर आज योग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि यह एक ऐसी पद्धति है जो मनुष्य को यह सिखाती है कि किस प्रकार इन दिव्य गुणों की अभिव्यक्ति के द्वारा आन्तरिक जागरूकता लायी जाती है। स्व-सन्तुष्टि और विषयासक्ति मानव-स्वभाव को पूर्णतया जकड़ लेती है और उसे पशुता के निम्न स्तर तक खींच कर ले जाती है। जितना अधिक आप अपने वास्तविक आध्यात्मिक स्वभाव की उपेक्षा करते हैं, उतना अधिक आप अन्धकार और कष्टों में प्रवेश करते जाते हैं। योग आपको वह उपकरण प्रदान करता है जिसके द्वारा आप अपनी वर्तमान मानवीय दशा में परिवर्तन ला सकते हैं। योग आपका उन भगवान् के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित कर देता है जिनके साथ आप वास्तव में अभिन्न रूप से सम्बन्धित हैं। इस परम सौभाग्य को छोड़ देना समस्त मानव-जाति के लिए बहुत बड़ी विपदा को लाना होगा। तथापि, आधुनिक युग में योग का प्रचार-प्रसार होने से आशा की जा सकती है कि मानव-जाति का भविष्य अच्छा होगा। योग अन्धकार के स्थान पर उजाला ला सकता है, और यह अविवेक को विवेक में परिवर्तित कर सकता है। यह निर्बलता को शक्ति में और दासता को आत्म-जय में परिवर्तित कर सकता है। जहाँ बुद्धिहीनता है, वहाँ यह सद्बुद्धि ला सकता है। यह मनुष्य को भगवान् की सच्ची सन्तान बना सकता है।

ये विचार गम्भीरतापूर्वक चिन्तन एवं मनन करने के अधिकारी हैं। सोचें, विचार करें, मनन करें और यदि हो सके तो मानव की वर्तमान अवस्था को दृष्टि में रखते हुए आप अपने निजी जीवन में कुछ कर सकते हों तो अवश्य प्रयास करें। व्यक्तिगत रूप से मैं यह अनुभव करता हूँ कि मेरे इस कथन में, कि मानवता की वर्तमान अवस्था में से निकलने का एकमात्र यही उपाय है, किसी भी प्रकार से अतिशयोक्ति नहीं है। यह न तो कट्टरपन्थी है और न ही हठधर्मिता है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकों मार्ग प्रशस्त किये गये हैं, किन्तु सफल होने के लिए ये किसी-न-किसी रूप में योग को साथ ले कर चले हैं। जब तक मनुष्य स्वयं का सम्बन्ध जागरूकतापूर्वक भगवान् के साथ स्थापित नहीं करता, तब तक कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। मानव और भगवान् के मध्य जब तक एक सीधा मार्ग प्रशस्त नहीं किया जाता, तब तक कोई भी सुधार सम्भव नहीं है। और वस्तुतः यही कार्य योग करता है, योग का उद्देश्य यही है। यह यथार्थ रूप में मानव को भगवान् और भगवान् को मानव के साथ संयुक्त करता है।

भगवान् आप पर कृपा करें कि आपकी बुद्धि प्रकाशित हो, और भगवान् की शान्ति आपके हृदय को आपूरित करे। भगवान् का प्रेम आपके जीवन में परिव्याप्त और आपके जीवन से प्रकटित हो। भगवान् के प्रकाश, पवित्रता और सत्य का आपके मन, वाणी और कर्मों में निवास हो। श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की कृपा से यह सब-कुछ योग के माध्यम से आपके जीवन में सम्भव हो।

(समाप्त)

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

धार्मिक उत्सवों का आध्यात्मिक अभिप्राय :

शिव – रहस्यपूर्ण रात्रि

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

(पूर्व-अंक से आगे)

अपने आध्यात्मिक जीवन में हर प्रकार से सन्तुलित स्वभाव अपना कर आप सफल हो सकते हैं। जैसा भगवद्गीता में अत्यन्त सुन्दर ढंग से कहा गया है, ''सन्तुलित खाओ, ''सन्तुलित कार्य करो, सन्तुलित बोलो, सन्तुलित शयन करो''—स्वर्णिम मार्ग, मध्यम मार्ग है। भगवान् विश्व की समस्त शक्तियों के समन्वय हैं। समन्वय अर्थात् मध्यम पथ, न तो अधिक इधर, न उधर। आप यह नहीं कह सकते कि यह है अथवा यह नहीं है। हमें नहीं ज्ञात, यह क्या है। जैसा बुद्ध ने कहा, '''कुछ भी नहीं है' एक छोर है, 'सब-कुछ है' दूसरा छोर है। भगवान् मध्य में हैं। सत्य मध्य में है।'' अतः, मध्यम पथ उत्तम पथ है जो समझ-सहित तपस्या का मार्ग है। यह मध्यम पथ की विशेषता है। तपस्या-रहित समझ व्यर्थ है। समझदारी-रहित तपस्या भी व्यर्थ है। तप समझ-सहित होना चाहिए तथा समझ तप-सहित आत्म-निग्रह सहित ज्ञान तथा ज्ञान सहित आत्म-संयम, ज्ञान कहलाता है। आत्म-निग्रह सहित ज्ञान, ज्ञान कहलाता है, जब कि आत्म-संयम रहित ज्ञान केवल सूखी बौद्धिकता है। उसका कोई प्रयोजन नहीं है। समझ के बिना किया गया तप एक प्रकार की मूर्खता है। इसका कोई सही परिणाम नहीं निकलेगा।

इसीलिए, भगवान् शिव मात्र एक तपस्वी नहीं हैं, अपितु ज्ञान के स्रोत भी हैं। समस्त ज्ञान मुमुक्षु भी भगवान् शिव की आराधना करते हैं, क्योंकि वे समस्त शिष्यों, विद्वानों तथा ज्ञान के साधकों के भगवान् हैं। अतः, महाशिवरात्रि भगवान् द्वारा हमें प्रदत्त एक अत्यन्त शुभ अवसर है। इसीलिए, इस दिन हृदय से भगवान् की शक्ति पर पूर्ण विश्वास रखते हुए, विषयेन्द्रियों से कुछ भी अपेक्षा न रखते हुए तथा स्वर्ग के साम्राज्य को समक्ष पा कर आनन्दित होते हुए भगवान् शिव से प्रार्थना कीजिए। भगवान् अवश्य आयेंगे। ब्रह्माण्डीय शक्तियाँ सब ओर हैं तथा हम उनका किसी समय भी आवाहन कर सकते हैं, बस हमारी इच्छा-शक्ति तथा आवाहन का ढंग प्रबल होना चाहिए। हम धन्य हैं क्योंकि हम भगवान् के साम्राज्य में रहते हैं, हम धन्य हैं क्योंकि हम सत्य के अन्वेषक हैं, हम धन्य हैं क्योंकि हम एक महान् गुरु के शिष्य हैं। हम धन्य हैं—तीन गुना, चार गुना, पाँच गुना क्योंकि हम भगवान् का अन्वेषण कर रहे हैं तथा भगवान् सबका इस सृष्टि में। भगवान् संसार का अन्वेषण कर रहे हैं तथा संसार भगवान् का। यह सृष्टि का रहस्य है, आध्यात्मिक पथ की सूक्ष्मता है तथा ध्यानपूर्ण जीवन की महत्ता है। भगवान् शिव ज्ञान तथा वैराग्य का मिश्रित स्वरूप हैं जिनकी आराधना हम शिवरात्रि में करते हैं।

भगवान् शिव शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। वे आशुतोष कहलाते हैं। आशुतोष का तात्पर्य है 'सरलतापूर्वक प्रसन्न होने वाला'। वे कठोर नहीं हैं। आप भगवान् शिव को आसानी से प्रसन्न कर सकते हैं। यदि आप उन्हें पुकारें, तो वे आयेंगे। कभी-कभी उन्हे 'भोले बाबा' भी कहा जाता है—अत्यन्त सरल, कठोर नहीं। वे बिना बुलाये ही आपकी सहायता हेतु आते हैं। उन्होंने पाण्डवों की सहायता की। पाण्डवों तथा कौरवों में महाभारत युद्ध हो रहा था। भगवान् शिव ने उन्हें ज्ञात हुए बिना उनकी सहायता की। भगवान् शिव ने अदृश्य हो कर पाण्डवों की सहायता की, तो वे हमारी सहायता क्यों नहीं

करेंगे? वे उन सबकी सहायता करते हैं जो सही मार्ग पर अग्रसर हैं। अतः, हम धर्म के मार्ग पर अग्रसर हों तथा दिव्य आशीष प्राप्त करें।

हम इस सम्पूर्ण प्रकरण को दूसरे ढंग से देख सकते हैं। संस्कृत शब्द 'शिवरात्रि' का अर्थ है 'शिव की रात्रि'। इस दिन हमें दिन में उपवास रखना तथा रात्रि में जागना पड़ता है। आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि शिव का रात्रि से सम्बन्ध क्यों है तथा दिन से क्यों नहीं, जिससे हम दिन में जाग सकें तथा रात्रि में उपवास रख सकें। इसके स्थान पर, पूरी बात विपरीत क्यों है? शिव का रात्रि से सम्बन्ध अत्यन्त आध्यात्मिक तथा रहस्यपूर्ण संयुक्तार्थ रखता है। ऐसा नहीं है कि भगवान् शिव के रूप में प्रत्यक्ष दिव्यता का रात्रि-काल से कोई विशेष सम्बन्ध है। यदि आप उपनिषद् तथा उच्च आध्यात्मिक महत्ता वाली ऐसी रहस्यपूर्ण पुस्तकों का गहन अध्ययन करें, तो आप पायेंगे कि परम सत्ता, परम पुरुष अपनी मौलिक स्थिति में अत्यधिक प्रकाश के कारण घोर अन्धकार के रूप में दर्शाये गये हैं। यह विशेषण अथवा गुण 'अत्यधिक प्रकाश के कारण' लिखना आवश्यक है। यह अन्धकार अत्यधिक प्रकाश के कारण है। यदि आप कुछ मिनटों के लिए सूर्य को खुली आँखों से देख कर दूसरी ओर देखें, तो आपको केवल अन्धकार दिखेगा। सूर्य आपको इतना चकाचौंध कर देता है कि आपको सब अन्धकारमय दिखता है। महाभारत में कहा गया है कि जब भगवान् श्रीकृष्ण ने कौरवों की सभा में विश्वरूप दिखाया, तब मानो, सब अन्धकारमय था। तेज इतना अधिक था कि मनुष्य की आँखों को सब अन्धकारमय दिखा। इसीलिए, ऋग्वेद की एक प्रसिद्ध सृष्टि-स्तुति में हमें सृष्टि के मूल स्वरूप का ऐसा ही वर्णन मिलता है। नासदीय सूक्त नामक वेद की एक स्तुति है जिसमें कहा गया है : ''तम आसीत् तमसा गूढमग्रे।'' आरम्भ में अन्धकार में लिपटा अन्धकार था। हमारे अनुसार, प्रकाश पदार्थों का दिखायी देना है तथा इसीलिए पदार्थों का न दिखायी देना हमारे द्वारा रात्रि माना जाता है। क्योंकि दिखायी देने की प्रक्रिया से जो ज्ञान अथवा चेतना असम्बद्ध है, वह मानव-मन को अज्ञात है।

सामान्यतया, ज्ञात होना, पदार्थ का ज्ञात होना है; तथा यदि पदार्थ को जानने हेतु न हो, तो यह कुछ भी ज्ञात न होने के समतुल्य है। उदाहरणार्थ, गहन निद्रा। हम सोते क्यों हैं? क्या आपको कारण ज्ञात है? हम प्रत्येक रात्रि सोते क्यों हैं? इसकी क्या आवश्यकता है? इसकी आवश्यकता मनोवैज्ञानिक तथा कुछ सीमा तक अत्यन्त पारलौकिक है। इन्द्रियाँ लगातार पदार्थों को नहीं देख सकतीं, क्योंकि देखना थकाने वाली प्रक्रिया है। सम्पूर्ण शरीर, सम्पूर्ण तन्त्रिका प्रणाली, सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक उपकरण पदार्थों को देखते समय सक्रिय हो जाते हैं तथा हमें ज्ञात हुए बिना इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं। वे चौबीसों घण्टे पदार्थों का चिन्तन नहीं कर सकतीं। वे विषयों का चिन्तन दिनभर, चौबीसों घण्टे क्यों नहीं कर सकतीं? कारण यह है कि देखना चेतना की दृष्टि से ही असामान्य प्रक्रिया है। पदार्थ को देखना हमारे व्यक्तित्व के अपने पदार्थ के सम्बन्ध में एक विशेष इन्द्रिय-पन्थ द्वारा एक पक्ष का पृथक् होना है। अनेकों के लिए यह समझना कठिन है। यह अत्यन्त मनोवैज्ञानिक रहस्य है। चेतना अविभाज्य है। यह स्पष्ट है। आपमें से अनेकों ने यह सुना होगा। चेतना अविभक्त है जिसे भागों में विभक्त नहीं किया जा सकता। अतः, इसे दो टुकड़ों—कर्ता तथा विषय में नहीं बाँटा जा सकता। इस आधार पर दृष्टा तथा दृश्य में देखने की प्रक्रिया में विभाजन नहीं हो सकता। इसे स्पष्ट करने के लिए हम स्वप्नावस्था का अवलोकन करते हैं।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : मेधा सचदेव)

शिवा के प्रवचन – देहरादून में :

चिकित्सक के रूप में रोगी

परम पूज्य श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी महाराज

(पूर्व-अंक से आगे)

आप हॉस्पिटल को जीवन देते हैं

फिर दून हॉस्पिटल के सहयोगी शल्य चिकित्सक, डॉ. मित्रा के आवास पर गये। डॉक्टर एवं उनकी धर्मपत्नी ने शिवा तथा उनकी मण्डली का भलीभाँति स्वागत-सत्कार किया। शिवा के ग्रामोफोन रिकॉर्ड चलाये गये।

''मैं जानता हूँ स्वामी जी कि यह कहना थोड़ा विचित्र लगेगा, किन्तु हमारे लिए यह अत्यन्त दयनीय स्थिति है कि आप कुछ ही दिनों में हमें छोड़ कर जा रहे हैं। आपके बिना चिकित्सालय वीरान दिखायी देगा। गत कुछ सप्ताहों से आपने इस स्थान पर प्राण-संचार कर दिये हैं। कितने अधिक लोग इन दिनों में इस चिकित्सालय में आये—किन्तु उनमें से अधिकांश आपके दर्शन करने के लिए आते थे। चिकित्सालय की प्रत्येक वस्तु जीवन्त हो गयी थी,'' डॉ. मित्रा ने कहा।

''आप ऋषिकेश आ सकते हैं। अवश्य आइए।'' शिवा ने आमन्त्रित किया।

इसी बीच, श्रीमती मित्रा गुरुदेव द्वारा दी गयी बहुत सी पुस्तकों में से निकाल कर 'लाइट पॉवर एण्ड विज़डम' पढ़ने में लीन हो गयी थी।

''यह पुस्तक अद्‌भुत है, स्वामी जी! आपने हमें कितनी पुस्तकें दे दी हैं स्वामी जी! इससे तो हमारा एक अच्छा पुस्तकालय बन जायेगा।''

''मैं ऋषिकेश जा कर आपको अपनी पुस्तकों का पूरा सेट भेज दूँगा,'' शिवा ने कहा और फिर यह देख कर कि बिना शिर घुमाये और दृष्टि तक उठाये वह अत्यन्त ध्यान सहित वह पुस्तक पढ़ रही थी, शिवा ने कहा, ''आप यह पुस्तक थोड़ा बाद में भी पढ़ सकती हैं। पहले अपने हाथ की इन सब पुस्तकों के शीर्षक पढ़ें!'' वह बिलकुल स्कूल के छात्रों की तरह उत्सुकता से प्रत्येक पुस्तक को पकड़ती; कभी आगे, कभी पीछे के पृष्ठ उलट-पलट कर पढ़ते देख कर शिवा ने पुनः कहा, ''मैं भी ऐसे ही करता।''

डॉ. मित्रा ने अपनी धर्मपत्नी की ओर देखते हुए कहा, ''निःसन्देह इसे यह पुस्तिका अत्यन्त रुचिकर लग रही है।''

''जी, मैंने यह 'लाइट पॉवर एण्ड विज़डम' पुस्तिका खोली ही थी कि इसकी प्रत्येक पंक्ति में मुझे ज्ञान का भण्डार प्राप्त हो गया। इससे हमारे समस्त संशयों का निवारण हो जाता है।''

'हाँ, हाँ, कुछ लोग कहते हैं कि यह रामायण जैसी है। आप नेत्र बन्द करके कोई प्रश्न मन में लायें और फिर इसका पृष्ठ पलट कर देखें, बस उसी पृष्ठ पर आपको उसका उत्तर मिल जायेगा!'' शिवा ने कहा।

''बिलकुल ऐसा ही है स्वामी जी'' श्रीमती मित्रा ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

फिर शिवा ने कीर्तन किया। श्रीमती मित्रा कीर्तन-ध्वनियाँ सुन कर रोमांचित हो गयी। शिवा के समाप्त करके उठ जाने के पश्चात् भी उसने नेत्र नहीं खोले। वह अपने ही संसार में—अथवा शिवा के लोक में थी। उसे झकझोरना पड़ा! फिर शिवा ने डॉक्टर से विदाई ली और चिकित्सालय लौट आये।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

शिवानन्द ज्ञानकोष :

भगवत्–प्रेम

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

(पूर्व–अंक से आगे)

प्रेम का शुद्ध स्वरूप सेवा

प्रेम सेवा, दान, उदारता और परोपकारिता का रूप लेता है। परोपकार दया का व्यावहारिक रूप है। यह प्रेम की स्वीकारात्मक अभिव्यक्ति है। उसी का नकारात्मक रूप अहिंसा है। केवल दया–भाव ही पर्याप्त नहीं, आध्यात्मिक उन्नति में व्यावहारिक दयालुता आवश्यक है। साधक को कर्मरत रहना चाहिए।

आपकी नस–नस में सेवा का भाव भरा रहना चाहिए, सेवा–भावना स्वाभाविक हो, दिखावे के लिए नहीं। प्रेम, श्रद्धा तथा भाव बिना सारी सेवा कोरी रह जाती है, भाव तथा प्राणपूर्ण सेवा के फलस्वरूप प्रभु आपके सहायक रहते हैं।

आदिगुरु शंकराचार्य, यीशु, बुद्ध भगवान् और मुहम्मद ने भी सेवा की। राजा जनक तथा समर्थ रामदास जी ने भी सेवा की। सेवा करो, प्रेम करो, देते ही रहो—इसी सिद्धान्त पर चलने वाले का कष्ट के समय तथा संकट–काल में दिव्य–ज्योति पथ–प्रदर्शन करती है।

दूसरों की प्रसन्नता के लिए उसी प्रकार प्रयास करो जिस प्रकार अपनी प्रसन्नता के लिए करते हो। प्रेम–भरे वचनों से उत्साह प्रदान करो, अपनी मुस्कराहट से दूसरों को प्रसन्न कर दो, दयापूर्ण बर्ताव करो, थोड़ी सेवा करो, दु:खियों के आँसू पोंछो, दूसरों के मार्ग की कठिनाइयों का निवारण करो, इससे आपको अति आनन्द मिलेगा।

विश्व–प्रेम

निर्धनों, दीनों, तथा दु:खियों की पूजा करिए, ये ही आपके प्रथम देवता हैं।

सबसे प्रेम करिए, इससे लाखों यज्ञों, तपस्याओं और व्रतों से भी अधिक फल मिलेगा। पड़ोसी के सुख को अपना ही सुख और उसके दु:ख को अपना ही दु:ख मानिए।

सब मानव एक हैं, ईश्वर एक है, प्रेम एक है, नियम एक है, साक्षात्कार एक है, हम सब एक ही वृक्ष के फल हैं और एक ही शाखा के पत्ते हैं, इस जगत् में कोई भी पराया नहीं, विकास की प्रक्रिया में प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का ही अंश है।

प्राणीमात्र को अपने समान ही मानें, मित्रों तथा शत्रुओं से शान्तिपूर्ण व्यवहार रखें।

समस्त मनुष्य एक ही शरीर के अंग हैं, समस्त सृष्टि भगवान् का ही कुटुम्ब है, इसलिए उसकी समस्त सृष्टि से प्रेम करें, पेड़ के पत्तों से भी प्रेम करें, पशुओं से प्रेम रखें, पक्षियों से प्रेम करें, पौधों से प्रेम रखें, सबसे प्रेम करें, इन सबके पीछे जो रहस्य है उसका ज्ञान–सूत्र यही प्रेम है।

मैं प्रेम–धर्म का अनुयायी हूँ। मैं एक सच्चा ईसाई, सच्चा मुसलमान, सच्चा हिन्दू, सच्चा बौद्ध, सच्चा सिक्ख और सच्चा पारसी हूँ।

यथार्थ धर्म न तो कर्मकाण्ड में, न तीर्थ–स्नान और न ही तीर्थ–यात्रा में है, बल्कि सबसे प्रेम करने में है।

विश्व-प्रेम में सारा जगत् समा जाता है। इसमें सभी आ जाते हैं। विशुद्ध प्रेम की अनुभूति सब कर सकते हैं, इसका मार्ग सबके लिए खुला है, यह इतना विशाल है कि इस संसार में क्षुद्र से ले कर महान् तक इसमें समाविष्ट है, चींटी से ले कर हाथी तक के लिए, अपराधी बन्दी से चक्रवर्ती राजा तक के लिए, दुरात्मा से महात्मा तक के लिए। घृणा ही मनुष्य को मनुष्य से पृथक् करती है, राष्ट्र को राष्ट्र से, देश को देश से। मिथ्या अभिमान तथा अहंकार मानव में भेद डालता है, घृणा और अहंकार मन की ही क्रियाएँ हैं, ये अविद्या की उपज हैं, शुद्ध प्रेम के सामने ये टिक नहीं सकते।

समय की माँग

घृणा से घृणा उत्पन्न होती है, परन्तु प्रेम से प्रेम, भय से भय। यह अटल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। प्रेम भगवान् की शक्ति है, अत: इसका स्वाभाविक अधिकार है कि घृणा और पाप पर विजय पाये।

सबकी मुक्ति प्रेम में निहित है। इस अन्धकारमय जगत् में प्रेम ही आशा की किरण है। संसार को ऐसे नेताओं की आवश्यकता है, जिनमें सहानुभूति, सहयोग, प्रेम, त्याग, दया और सहिष्णुता हो। विश्व-प्रेम में ही व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति, लोक-कल्याण और विश्व-शान्ति का रहस्य छिपा है। अत: जगत्-भर में विश्व-प्रेम के प्रचार में लग जाना चाहिए।

प्रत्येक मोहल्ले में, प्रत्येक घर में जाइए, कीर्तन का प्रचार करिए। सामूहिक प्रार्थनाएँ करिए। प्रेम, एकता, सद्भावना, सेवा, त्याग, सहयोग तथा सहानुभूति का सन्देश पहुँचाइए। एकता, मित्रता और सहयोग का दिव्य सन्देश सब तक पहुँचे और मानवता के हृदय में प्रेम और भ्रातृभाव जागे, सारा जगत् प्रेम से ओत-प्रोत हो।

जीवन का ध्येय—प्रेम

सभी सन्तों, ऋषियों, भविष्यवक्ताओं ने प्रेम को ही जीवन का उद्देश्य बताया है। श्रीकृष्ण की रास-लीला प्रेम तथा दिव्य रहस्यों से भरी पड़ी है। चीर-हरण लीला का अर्थ अहंकार का नाश करना है। भगवान् की वंशी भी प्रेम का राग अलापती है। बुद्ध भगवान् तो प्रेम के समुद्र ही थे, उन्होंने सिंह के बच्चे के क्षुधा-निवारण हेतु अपने शरीर को दे दिया। राजा भोज ने बाज की भूख मिटाने के लिए कबूतर के वजन के बराबर अपनी छाती से मांस काट कर दिया। कैसे महान् थे वह? भगवान् राम के प्रत्येक कार्य में प्रेम भरा था। मेरे प्यारे बच्चो! इनसे प्रेरणा लो। प्रेम-पथ पर चल कर भगवान् से बातें करो और प्रेम के नित्यधाम में पहुँच जाओ, यही आपका परम धर्म है। आपका जन्म अपने जीवन-उद्देश्य, प्रेम की प्राप्ति के लिए हुआ है।

प्रेम में ही जियें। प्रेम में ही श्वास लें। प्रेम के ही गीत गायें। प्रेम का ही भोजन करें। प्रेम का ही पान करें। प्रेम की बातें करें। प्रेम की प्रार्थना करें। प्रेम का ही ध्यान करें। प्रेम का ही चिन्तन करें। प्रेम में ही विचरण करें। प्रेम में ही मृत्यु का आलिंगन करें। प्रेमाग्नि में मन, वचन, कर्म को शुद्ध करें। प्रेमरूपी पुराण-समुद्र में ही स्नान करें। प्रेमरूपी मधु-पान करके प्रेम की ही मूर्ति बन जायें।

इस शरीर को भगवान् का चल-मन्दिर मानें। सब प्राणियों में भगवान् के दर्शन करें—ऐसा भास होता रहे कि प्रभु ही सारे जगत् में व्याप्त हैं। एक ही दैवी शक्ति सब हाथों द्वारा कार्य करती है, सब नेत्रों द्वारा देखती है, सब कानों द्वारा सुनती है। आप अपने जीवन में परिवर्तन पायेंगे, परमानन्द और परम शान्ति प्राप्त करेंगे।

महाभारत

महाभारत के रचयिता श्री व्यास (कृष्ण द्वैपायन) थे। ये कौरव-पाण्डवों के प्रपितामह थे। इन्होंने अपने पुत्र शुकदेव तथा वैशम्पायन आदि को इस महाकाव्य का अध्ययन कराया। पाण्डवों के पौत्र परीक्षित के बेटे राजा जनमेजय ने एक महान् यज्ञ किया। जिसके श्रीगणेश में व्यास जी के आदेशानुसार वैशम्पायन जी ने जनमेजय को इस महाकाव्य का श्रवण कराया, तदुपरान्त सौति ने शौनकादि को उत्तर प्रदेश में सीतापुर के निकट नैमिषारण्य में महाभारत का श्रवण कराया, जैसे वैशम्पायन ने जनमेजय को सुनाया।

महाभारत की कथावस्तु

महाभारत सब शास्त्रों का सार है। यह नैतिकता, ज्ञान, राजनीति, धर्म, तर्कशास्त्रादि का विश्व-ज्ञान-कोष है। महान् रचयिता ने प्रथम अध्याय में ही ब्रह्मा को इसके विषय के बारे में इस प्रकार परिचित कराया कि इसमें वेदों का रहस्य, उपनिषदों के उपदेश, वैदिक संस्कारों का विवरण, इतिहास तथा पुराणों के सूक्ष्म तत्त्व, भूत, वर्तमान, भविष्य का ज्ञान, वृद्धावस्था, मृत्यु, भय और व्याधियों के सम्बन्ध में पहचान, वर्णाश्रम धर्म, तप तथा ब्रह्मचर्य के नियम, पृथ्वी, सूर्य-चन्द्र तथा सितारों की गति, न्याय, आयुर्वेदिक ज्ञान, दान के नियम, पाशुपत धर्म (लौकिक, पारलौकिक दिव्य जीवन), देवता और मनुष्य की उत्पत्ति, नदियों, देशों तथा नगरों का परिचय, युद्ध-कौशल, भाषा विज्ञान, व्याख्यान आदि हैं। जो-कुछ इसमें है वह अन्य पुस्तकों में है, जो इसमें नहीं है, वह कहीं भी नहीं मिलेगा। इसमें एक लाख श्लोक हैं।

अठारह पर्व हैं—१. आदि पर्व, २. सभा पर्व, ३. वन पर्व, ४. विराट् पर्व, ५. उद्योग पर्व, ६. भीष्म पर्व, ७. द्रोण पर्व, ८. कर्ण पर्व, ९. शल्य पर्व, १०. सौप्तिक पर्व, ११. स्त्री पर्व, १२. शान्ति पर्व, १३. अनुशासन पर्व, १४. अश्वमेध पर्व, १५. आश्रमवासिका पर्व, १६. मौसल पर्व, १७. महाप्रस्थानिका पर्व, १८. स्वर्गारोहणिका पर्व। प्रत्येक पर्व के अपने उप पर्व तथा अनेक अध्याय हैं।

महाभारत का कथासार

पाण्डवों और कौरवों के मध्य हुए महायुद्ध का महाभारत में वर्णन है। विचित्रवीर्य की मृत्यु के पश्चात् महर्षि व्यास से दो भाइयों, धृतराष्ट्र तथा पाण्डु का जन्म हुआ। धृतराष्ट्र के चक्षुविहीन होने के कारण पाण्डु ने राजपाट सँभाला। परन्तु बड़े भाई को राज्य-भार सौंप कर वे वन की ओर चले गये, जहाँ इनके पाँच बेटे युधिष्ठिर आदि उत्पन्न हुए जो सब पाण्डव कहलाये। धृतराष्ट्र के भी दुर्योधनादि एक सौ पुत्र हुए जो कौरव कहलाये। राजा पाण्डु पुत्रों की बाल्यावस्था में ही स्वर्ग सिधार गये और धृतराष्ट्र बालब्रह्मचारी भीष्मपितामह की सहायता से राजसिंहासन पर आरूढ़ रहे। कौरव और पाण्डव राजकुमारों का पालन-पोषण साथ-साथ ही हुआ। ये आचार्य द्रोणाचार्य जी द्वारा धनुर्विद्या में प्रशिक्षित हुए। दोनों ओर के राजकुमार अपने को राज्य अधिकारी मानते थे और दूसरे को शत्रु। उनके पारस्परिक सम्बन्ध आरम्भ से ही बिगड़ते चले गये। कौरवों के अत्याचारों के कारण पाण्डवों ने राज्य-त्याग किया और अनेक कष्टों का सामना किया। परन्तु द्रुपद-पुत्री से विवाह

हो गया तो धृतराष्ट्र ने उन्हें बुला कर आधा राज्य दे दिया। पाण्डवों के राज्य द्वारा देश की उन्नति हुई। उन्होंने इन्द्रप्रस्थ को राजधानी बना कर सुन्दर अश्वमेध यज्ञ किया। कौरवों को निमन्त्रित किया। परन्तु वे इनका उत्कर्ष देख कर जल उठे। वे इनकी हँसी-ठिठोली से क्रुद्ध हो कर लौटे तथा बदले की भावना से घर पहुँचे। उन्होंने पाण्डवों के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा। इन्हें बुला कर द्यूतक्रीड़ा में सब-कुछ हर लिया। पाण्डवों का अनादर किया। सबके सामने ही द्रौपदी के साथ दुर्व्यवहार किया। अन्त में निर्णय यह हुआ कि पाण्डव बारह वर्ष के लिए वनवास करें। तेरहवें वर्ष में इनका अज्ञात वास रहे। तदुपरान्त ये राज्य लेने के अधिकारी हो सकेंगे। पाण्डवों ने ऐसा ही किया। फिर भी कौरवों ने राज्य न लौटाया। इस कारण युद्ध हुआ, जिसमें पाण्डवों के अतिरिक्त समस्त सेनाओं का संहार हो गया। पाण्डवों को राज्य वापस मिल गया।

पाण्डवों को श्री कृष्ण, द्रुपद और विराट् की भारी सहायता मिली। इनकी कुल सेना सात अक्षौहिणी थी। कौरवों के भी कई मित्र-सम्बन्धी और सहायक थे। उनकी सेना ग्यारह अक्षौहिणी थी। भगवद्-कृपा तथा सत्य के बल पर विजय तो पाण्डवों की ही हुई।

भारत के इस प्रख्यात महाकाव्य महाभारत जैसा एक भी तो ग्रन्थ समस्त जगत् में नहीं है। इसी को पंचम वेद की संज्ञा दी जाती है। महाभारत की प्रमुख कथा के अतिरिक्त इसमें अन्य और कई अनगिनत कथाएँ हैं, जिनसे नैतिक उपदेश ग्रहण कर सकते हैं और जो प्राचीन भारत की विलक्षण प्रथाओं पर प्रकाश डालती हैं। यह ग्रन्थ भारत के राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन का इतिहास है। इसकी कथाएँ, गीत, कहानियाँ, वृत्तान्त, पहेलियाँ, उक्तियाँ तथा वार्तालाप सभी आश्चर्यजनक व शिक्षाप्रद हैं। इसमें महान् योद्धाओं, शक्तिशाली नायकों, सूक्ष्म विचारकों, धुरन्धर दार्शनिकों, ऋषियों, तपस्वियों और पतिव्रता पत्नियों के जीवन का सुन्दर चित्रण किया गया है।

महाभारत के भीष्म पर्व में श्रीमद्भगवद्गीता श्रीकृष्णार्जुन का मंगलमय संलाप है। गीता महाभारत का बीज तत्त्व है। नि:सन्देह शेष महाभारत प्रत्यक्ष या लाक्षणिक रूप से इसी योग पर एक निबन्ध बन कर रह जाता है।

महाभारत की आदि तथा अन्त की पंक्तियाँ याद रखना अति आनन्दप्रद है जो इस प्रकार हैं—''व्यास ने भगवान् वासुदेव की अवर्णनीय महिमा तथा तेज का गायन किया जो सबके आदि स्रोत तथा आश्रयदाता हैं, जो नित्य, अव्यय, स्वत:प्रकाश हैं, जो सबके अन्तर्वासी हैं और साथ ही पाण्डवों की सत्यवादिता तथा साधुवृत्ति के गुण गाये।'' और अन्त में—''मैं हाथ उठा कर ऊँची आवाज में कहता हूँ, परन्तु कोई भी तो मेरे शब्दों को नहीं सुनता जो उन्हें परम उल्लास, आनन्द तथा शान्ति प्रदान करते हैं। सभी कामनाओं तथा अर्थ की प्राप्ति तो धर्म से हो सकती है, तो फिर लोग धर्मपरायण क्यों नहीं? किसी भी दशा में धर्म को त्यागना नहीं चाहिए—चाहे प्राण बचाने के लिए अथवा भय, काम या लोभ-वश हो कर भी धर्म त्यागना नहीं चाहिए। यही भारत गायत्री है। हे मानव! रात्रि शयन से पूर्व तथा प्रात: जागरण के पश्चात् इसी का ध्यान करो। आपको सब-कुछ प्राप्त हो जायेगा। आपको मिलेगा गौरव, प्रसिद्धि, सम्पत्ति, दीर्घायु, नित्यानन्द, शाश्वत शान्ति तथा अमरत्व।''

महाभारत के पात्र

इस महाकाव्य का प्रत्येक पात्र अमर है। उनका जीवन-चरित्र अमर है, जिनकी जीवन-गाथा से नैतिक शिक्षा मिलती है। वीरशिरोमणि पितामह भीष्म, जिन्होंने मृत्यु को वश में कर रखा था और जिन्हें देवता भी जीत नहीं सकते थे अब भी हमें आत्म-त्याग, निर्भयतापूर्ण साहस तथा पवित्रता की प्रेरणा देते हैं। युधिष्ठिर न्यायपरायणता तथा धार्मिकता के आदर्श हैं। शासकों को वे अब भी प्रेरणा दे रहे हैं। वे न्याय, सहिष्णुता, स्थिरता, पवित्रता, सत्यप्रियता तथा क्षमा की मूर्ति थे। उनका नाम याद आते ही हमें अन्दर से एक अंकुश लगता है कि सत्य और धर्म का ही मार्ग अपनायें। कर्ण अपने उदार दानी होने की महिमा से ही हमारे हृदय में निवास करते हैं। वे तो लोक-प्रसिद्ध हैं। जगत् में अब भी किसी दानी को देख कर कहा जाता है कि यह तो कर्ण तुल्य है। अर्जुन को अब भी सर्वश्रेष्ठ परिपूर्ण मानव कहा जाता है और श्रीकृष्ण की तो हम संरक्षक और परित्राता जान कर पूजा करते हैं। जब भी हम पर संकट आता है, हम उन्हीं से प्रार्थना करते हैं—''हे भगवान्! जैसे पूर्व-काल में द्रौपदी और गजेन्द्र की रक्षा की थी, वैसे ही हमारी संरक्षा करिए।''

महाभारत के इन उच्च कोटि के पात्रों की उज्ज्वल कान्ति को काल के क्रूर हाथों ने भी नहीं बिगाड़ा है, इनका चरित्र निर्मल तथा प्रभावशाली ही रहा, तभी तो इनके महान् कार्य सराहनीय रहे। सभी देशों के महान् व्यक्तियों की सफलता का रहस्य उनकी निश्चयात्मकता में रहा। समय आने पर शूरवीर अपने कर्तव्य-पथ से किंचित् भी विचलित नहीं होते थे। मानव विस्मय-विमुग्ध हो जाता है, वाणी अवरुद्ध हो जाती है जब वह भीम का चमत्कारिक बल, अर्जुन की आश्चर्ययुक्त धनुर्विद्या, सहदेव की तलवार चलाने की दक्षता, नकुल की खगोल विद्या में निपुणता और युधिष्ठिर की न्यायप्रियता का अध्ययन करता है। भीष्म, कर्ण, द्रोण, परशुराम, जयद्रथ, धृष्टद्युम्न, अश्वत्थामा और दूसरे अनेक वीरों की शूरता के कार्य मनुष्य की शक्ति से बाहर के हैं। इन्होंने कठिन तपस्या करके प्रभु से वरदान प्राप्त किये थे। तभी तो ये ऐसे अद्भुत कार्य कर सके जो वर्णनातीत हैं।

द्रौपदी, सावित्री, कुन्ती, माद्री, दमयन्ती और गान्धारी—सभी उच्चकोटि की पतिव्रता थीं। जब भी उन पर महान् संकट, क्लेश, दुःख, मुसीबतें आन पड़ीं, उन्होंने साहस और निर्भयता ही दिखायी। अपनी पवित्रता तथा नैतिकता के बल पर उन्होंने कष्ट सहे। ये सभी आदर्श पत्नियाँ तथा आदर्श माताएँ सिद्ध हुईं। इस कारण ये अमर हुईं।

पाण्डव-द्रौपदी, नल-दमयन्ती, सावित्री-सत्यवान् के कष्टों से स्पष्टतया सिद्ध होता है कि जीवन में पूर्णता का मार्ग दुःखों का सामना करके ही पार होता है। कष्ट ही मनुष्य को ढालते, अनुशासन का पाठ पढ़ाते और शक्ति प्रदान करते हैं। जैसे अशुद्ध सोना भट्ठी में पिघलने के पश्चात् ही शुद्ध होता है, वैसे ही दुर्बल, अशुद्ध, अपूर्ण मनुष्य दुःखों और कष्टों की भट्ठी में से हो कर निकलने के पश्चात् ही शक्तिमान्, शुद्ध और पूर्ण बनता है।

प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र अविद्या का प्रतीक है और युधिष्ठिर धर्म का, दुर्योधन अधर्म का, द्रौपदी माया का, भीष्म वैराग्य का, दुःशासन नीचता का, शकुनि ईर्ष्या व विश्वासघातकता का, अर्जुन जीव का और भगवान् कृष्ण परम सत्ता के प्रतीक हैं। कुरुक्षेत्र अन्तःकरण है।

(क्रमशः)

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

बाल जगत्

कर्म योग

प्रिय अमृत पुत्रो!

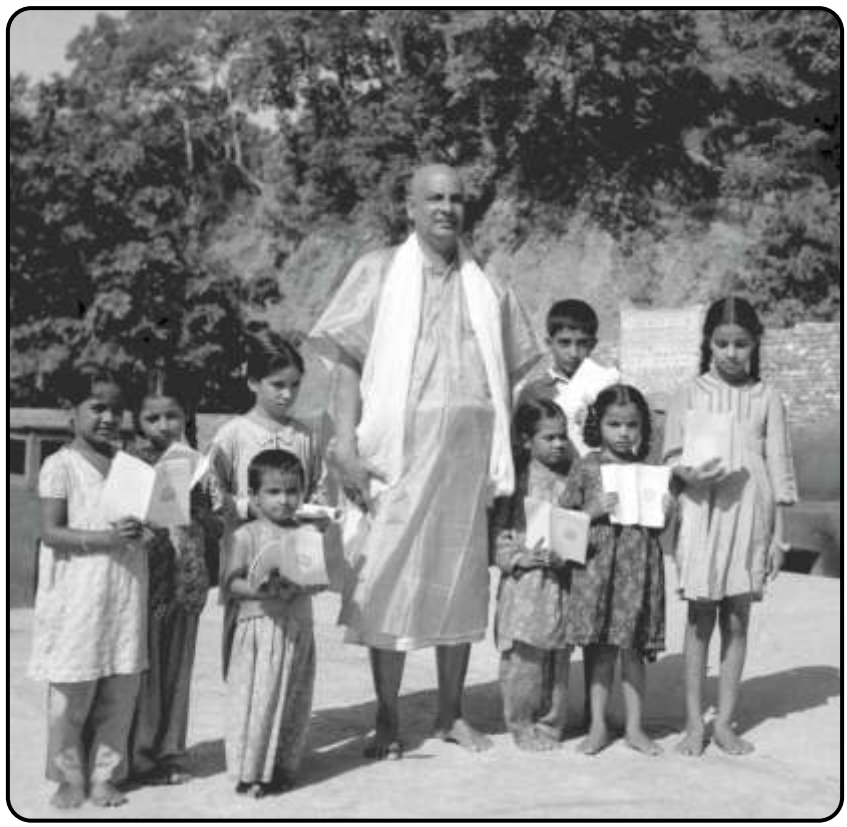

अपने आन्तरिक भावों की परीक्षा करते रहिए। स्वार्थपरक भावों को नष्ट कर डालिए।

अभिमान से रहित होकर कार्य कीजिए। निमित्त भाव का विकास कीजिए कि आप भगवान् के हाथ में निमित्त मात्र हैं।

अपने कर्मों तथा उनके फल को सदा ईश्वर को अर्पित कीजिए।

सुख-दुःख, लाभ-हानि, सफलता-विफलता में समदृष्टि एवं सन्तुलित मन बनाये रखिए।

स्वामी शिवानन्द

सद्गुणों का अर्जन

आशावादिता (Optimism)

आशावादिता एक सिद्धान्त है जिसके अनुसार सब-कुछ अच्छे के लिए होता है। यह वस्तुओं के प्रति उज्ज्वल एवं आशापूर्ण दृष्टिकोण रखने का स्वभाव है।

इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्माण्ड श्रेष्ठ स्थिति की ओर अग्रसर है। यह ऐसा विश्वास रखने का स्वभाव है कि परिस्थिति कितनी विपरीत प्रतीत हो; जो है अथवा घटित हो रहा है, वह उचित एवं कल्याणकारी है। यह निराशावादिता के पूर्णतया विपरीत स्वभाव है।

आशावादी व्यक्ति प्रत्येक कठिनाई में एक नवीन अवसर देखता है; निराशावादी व्यक्ति प्रत्येक अवसर में कठिनाई देखता है।

एक आशावादी व्यक्ति जीवन से सर्वश्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है। वह अच्छे की आशा करता है, वस्तु-परिस्थितियों का सदुपयोग करता है तथा सबके लिए अच्छा सोचता है।

आशावादिता आपको प्रसन्न-प्रफुल्लित रखती है। दुर्घटना उतनी भयंकर नहीं होती है जितना आपका भय था। पर्वत की चढ़ाई उतनी खड़ी नहीं होती है जितनी चढ़ने से पूर्व आपने सोची थी। कठिनाई उतनी बड़ी नहीं होती है जितनी आपने कल्पना की थी। वस्तु-परिस्थितियाँ आपकी कल्पना से अच्छी अवस्था में ही प्राप्त होती हैं।

प्रत्येक परिस्थिति का एक उज्ज्वल पक्ष होता है। अतः मन को सदैव आशावादिता एवं आत्मविश्वास से पूर्ण रखिए। इससे ही कठिनाई पर आधी विजय प्राप्त हो जायेगी।

स्वामी शिवानन्द

दुर्गुणों का नाश

निराशावादिता (Pessimism)

निराशावादिता वह सिद्धान्त अथवा अवधारणा है जो विश्व को अच्छा मानने के स्थान पर बुरा मानता है। यह मन का वह स्वभाव है जो वस्तु-व्यक्तियों के अन्धकारमय अर्थात् नकारात्मक पक्ष को ही अधिक देखता है। यह जीवन के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण है। यह आशावादिता का विपरीत शब्द है जो जीवन तथा वस्तुओं के उज्ज्वल एवं सकारात्मक पक्ष को देखता है।

निराशावादिता जीवन के प्रति विषादपूर्ण अथवा हताशापूर्ण दृष्टिकोण रखने का स्वभाव है। यह असफलता अथवा दुर्भाग्य का पूर्वानुमान तथा प्रत्याशा करने की आदत है।

एक निराशावादी व्यक्ति वह है जो ऐसा विश्वास करता है कि सब-कुछ अशुभ एवं बुरा ही होने जा रहा है। वस्तुओं के नकारात्मक पक्ष पर ही अपना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित करने वाला व्यक्ति निराशावादी होता है।

एक निराशावादी व्यक्ति सदैव उदास, हताश, अकर्मण्य एवं आलसी होता है। वह प्रसन्नता-प्रफुल्लता से अपरिचित ही रहता है। वह जगत् में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है।

धन-सम्पत्ति, स्वास्थ्य एवं प्रतिष्ठा खो जाये तो भी आप जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत कर सकते हैं यदि आपका स्वयं में विश्वास है और आप आशावादी हैं।

आशावादी बनिए तथा सर्वव्यापक आत्मा में आनन्दित रहिए। जीवन की किसी भी परिस्थिति में अत्यधिक प्रसन्न एवं प्रफुल्लित रहने का प्रयास करिए। इसके लिए आपको अभ्यास करना होगा।

स्वामी शिवानन्द

अकबर और भिखारी

बादशाह अकबर ने एक बार एक बहुत विशाल भण्डारे का आयोजन किया जिसमें सहस्रों की संख्या में जनता भोजन करने के लिए आयी। अत्यन्त स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जा रहे थे और हज़ारों-लाखों की संख्या में धनी और निर्धन, समस्त नागरिक उमड़े चले आ रहे थे।

जब भोजन करने के लिए एक जन-समूह भोजन करने बैठ गया और भोजन परोसना आरम्भ किया गया तो एक व्यक्ति को छोड़ कर शेष सभी लोग बादशाह का गुणगान करने लगे और उच्च स्वर में, 'अकबर बादशाह की जय!' कहते हुए जयघोष करने लगे।

अकबर महल के छज्जे पर खड़ा हुआ था, उसने उस मनुष्य को, जो लोगों के साथ जयघोष न करके चुपचाप बैठा हुआ था, यह कहते हुए बुलवाया ''उस आदमी से कहो कि उसे तब तक भोजन नहीं दिया जायेगा जब तक वह मेरा गुणगान नहीं करता और अन्य लोगों के साथ, 'अकबर बादशाह की जय', चिल्ला कर नहीं कहता। उसे महल में प्रवेश भी करने न दिया जाये और अभी घसीटते हुए महल से बाहर निकाल दिया जाये।''

सम्राट की आज्ञा का तत्काल ही कठोरतापूर्वक पालन कर दिया गया।

रात्रि में सम्राट अत्यन्त व्याकुलता सहित शैया पर करवटें बदल रहा था। उसे किसी भी प्रकार से निद्रा नहीं आ रही थी। एक अद्‌भुत आवाज़ में कोई बोल रहा था, ''अकबर! यद्यपि मैं सर्वशक्तिमान् परमात्मा हूँ जिसकी महिमा का वर्णन सहस्रों भक्तों एवं विद्वानों ने किया है। मैं निम्न से भी निम्नतर को, निर्धन से अति निर्धन को, दुष्ट से दुष्टतम लोगों को, जो हर क्षण मेरी निन्दा करते हैं, मुझे कोसते रहते हैं, जो मेरे होने में ही विश्वास नहीं करते, उन सब पर भी अपनी कृपा करने से इन्कार नहीं करता। और क्या तुम इस व्यक्ति को भोजन करने की स्वीकृति नहीं दोगे जो तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता! वह मनुष्य एक महान् सन्त है और मेरा गहन भक्त है। उसके लिए तुम्हारा गुणगान करने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यदि तुम उसे भोजन दोगे, तो तुम्हें आशीर्वाद प्राप्त होगा।''

अकबर को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था; किन्तु वह आवाज़ और अधिक तीव्र एवं ऊँची होती जा रही थी, और फिर शीघ्र ही उन शब्दों की गूँज से सम्पूर्ण कक्ष भर गया। अन्ततः अकबर को विश्वास हो गया कि यह भगवान् की ही आवाज़ थी।

प्रातः होते ही अकबर ने उस निर्धन मनुष्य की खोज के लिए अपने सभी सेवकों को चारों ओर भेज दिया। जब वह व्यक्ति आया तो उसे देखते ही बादशाह उसके चरणों में गिर कर क्षमा-याचना करने लगा।

वह सन्त मुस्कराये और बोले, ''बादशाह! आपको क्षमा-याचना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान् कभी अपमानित नहीं हो सकते, और इसी प्रकार उनके भक्तों का भी कभी अपमान नहीं किया जा सकता। आप सौभाग्यशाली हैं, क्योंकि आपने जो-कुछ किया, उसके कारण आपको भगवान् की आवाज़ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया और भगवान् से ही शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य भी मिला।''

स्वामी शिवानन्द

स्वामी शिवानन्द मेमोरियल गवर्मेन्ट प्राइमरी स्कूल, मुनि की रेती, ऋषिकेश के नव–निर्मित भवन का उद्घाटन

''बालक देश का भावी नागरिक है। वह राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर है। उसे अपने भीतर निहित सुप्त क्षमताओं एवं योग्यताओं को उचित शिक्षा एवं संस्कृति के माध्यम से अभिव्यक्त होने देना अति आवश्यक है।''

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को बालकों से अथाह स्नेह था और वे चाहते थे कि सभी बालकों को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित होने का सौभाग्य प्राप्त हो। इसी उद्देश्य को ले कर उन्होंने १९४२ में शिवानन्दनगर में एक प्राथमिक विद्यालय प्रारम्भ किया जिससे कि वहाँ के स्थानीय बच्चों को पढ़ने, लिखने

और गणित का ज्ञान दिया जा सके। विजयादशमी के पावन दिवस, १९ अक्तूबर, १९४२ को टिहरी दरबार की औपचारिक आज्ञा प्राप्ति के साथ 'शिवानन्द प्राइमरी स्कूल' प्रारम्भ कर दिया गया। प्रारम्भ में, जहाँ अब समाधि हॉल है, उस जगह खुले स्थान पर यह विद्यालय चलाया गया।

'शिवानन्द प्राइमरी स्कूल' में पहली से पाँचवीं तक की कक्षाएँ पढ़ायी जाती थीं और लगभग ३५ से ४० बालक भजनगढ़, चौदहबीघा, खारास्रोत, मुनि की रेती, तपोवन आदि के निकटवर्ती क्षेत्रों से पढ़ने के लिए आते थे। 'शिवानन्द प्राइमरी स्कूल' के विद्यार्थियों को गुरुदेव से प्रत्यक्षतः आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। वे बालक भगवद्गीता का पारायण करते, प्रार्थना और कीर्तन करते तथा साधना सप्ताहों एवं आश्रम के अन्य कार्यक्रमों में संक्षिप्त प्रवचन भी दिया करते थे।

१९६३ में, गुरुदेव की महासमाधि के उपरान्त, समाधि मन्दिर का निर्माण-कार्य प्रारम्भ हो जाने के कारण, वर्ष १९६४ में इस विद्यालय को वर्तमान स्थान अर्थात् 'गुरु निवास' के सामने स्थानान्तरित कर दिया गया। बाद के वर्षों में इस विद्यालय को उस समय की उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ले लिया गया और तब से यह 'गवर्मेन्ट प्राइमरी स्कूल, मुनि की रेती' के नाम से जाना जाने लगा; फिर जब उत्तर प्रदेश में से नया राज्य उत्तराखण्ड बना तो यह विद्यालय उत्तराखण्ड सरकार के पास आ गया।

गवर्मेन्ट प्राइमरी स्कूल, मुनि की रेती वर्ष २०२० तक एक छोटे से भग्न भवन में चलाया जा रहा था। दो वर्ष पूर्व, विद्यालय के अधिकारी विद्यालय के लिए नये भवन का निर्माण करवाने की प्रार्थना को ले कर आश्रम में पहुँचे। प्रशंसा के प्रतीक रूप में, उत्तराखण्ड सरकार ने शिक्षा सचिव के माध्यम से विद्यालय का नाम

'स्वामी शिवानन्द मेमोरियल गवर्मेन्ट प्राइमरी स्कूल' करने का आज्ञा-पत्र जारी कर दिया। इसके उपरान्त कार्य प्रारम्भ हो गया, और दो वर्षों के अल्प समय में ही विद्यालय की निर्माण समिति द्वारा पुराने भवन को ध्वस्त करके उसके स्थान पर नये तीन मंज़िले भवन का निर्माण कर दिया गया। इस समस्त निर्माण-कार्य के लिए मुख्यालय आश्रम द्वारा कुल एक करोड़ पन्द्रह लाख रुपये की धनराशि दी गयी।

'स्वामी शिवानन्द मेमोरियल गवर्मेन्ट प्राइमरी स्कूल' के नव-निर्मित भवन का उद्घाटन ५ फरवरी २०२३ को आयोजित किया गया था। परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने, श्री वंशीधर तिवारी, आइ.ए.एस., शिक्षा महानिदेशक, उत्तराखण्ड, श्रीमती वन्दना

गैब्रियल, निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा विभाग के अन्य उच्चाधिकारी, स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, आश्रम के अन्तेवासी, विद्यालय के अध्यापक और विद्यार्थियों की उपस्थिति में इस नव-निर्मित भवन का उद्घाटन किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप-प्रज्वलन, प्रारम्भिक प्रार्थनाओं, तदुपरान्त संगमरमर शिला के अनावरण तथा विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति के साथ किया गया।

श्रीमती वन्दना गैब्रियल ने अपने भाषण में आश्रम द्वारा किये गये इस उदात्त कार्य के लिए शिक्षा विभाग की ओर से धन्यवाद व्यक्त किया। श्री वंशीधर तिवारी जी ने अपने भाषण में स्थानीय बच्चों की शिक्षा के प्रति मुख्यालय आश्रम की इस मूक सेवा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस सेवा-कार्य को महादान माना जाता है। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका, श्रीमती रजनी ममगाई ने वित्तीय-सहायता तथा निर्माण-कार्य में बहुमूल्य निर्देशन एवं परामर्श देने के लिए आश्रम के अधिकारी वर्ग के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया। श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के आशीर्वचन एवं पावन प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मुख्यालय आश्रम में श्री महाशिवरात्रि महोत्सव

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशांकप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शंकरम् ।।

''उन शंकर भगवान् के चरणकमलों में नमन एवं वन्दन करते हैं जो शंख तथा चन्द्रमा के समान दीप्तिमान हैं, जिनकी अत्यन्त मनोरम देहयष्टि पर व्याघ्रचर्म वस्त्र-रूप में सुशोभित है और जो भयंकर विषधर सर्पों को आभूषणों के रूप में धारण किये हुए हैं, गंगा एवं चन्द्रमा जिनको अति प्रिय हैं, जो काशी के नाथ हैं, कलियुग के समस्त पापों के विनाशक, सबका कल्याण करने वाले कल्पवृक्ष, माँ भवानी के पति, समस्त गुणों के भण्डार और कामदेव को दहन करने वाले हैं।''

महाशिवरात्रि का पावन पर्व मुख्यालय आश्रम में १८ फरवरी २०२३ को अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति सहित मनाया गया। भारत के विभिन्न स्थानों से तथा विदेश से भारी संख्या में भक्त जन सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन धाम में महाशिवरात्रि के महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए अत्यन्त उत्साहपूर्वक आये हुए थे।

इस पर्व के मंगलाचरण के रूप में १३ से १७ फरवरी तक नित्य दो घण्टे के लिए श्री विश्वनाथ मन्दिर के प्रांगण में आश्रम के संन्यासियों, ब्रह्मचारियों, साधकों और अतिथियों द्वारा पञ्चाक्षरी मन्त्र, 'ॐ नमः शिवाय' का सामूहिक कीर्तन किया जाता रहा।

श्री विश्वनाथ भगवान् के चरणकमलों में श्रद्धापूर्ण समर्पण के रूप में, तमिलनाडु की डीएलएस करीकुडी शाखा के भक्तों सहित श्री अरुणाचलम जी ने तमिल भाषा में सन्त माणिक्कवाचकर द्वारा रचित एक अत्यन्त सुन्दर काव्यगीत 'तिरुवाचकम्' का १५ और १६ फरवरी को, जिसमें भगवान् शिव की महिमा का वर्णन किया गया है, का गान किया।

महाशिवरात्रि दिवस का कार्यक्रम प्रातः ५ बजे प्रार्थना, ध्यान, प्रभातफेरी और हवन के साथ

किया गया जिसके उपरान्त प्रातः ७ से सायं ६ बजे तक सुमधुर धुनों में 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का सामूहिक अखण्ड कीर्तन हुआ। रात्रि ८ बजे से भव्य रूप में सजाये गये श्री विश्वनाथ मन्दिर के गर्भगृह में भगवान् श्री विश्वनाथ की महापूजा प्रारम्भ की गयी। चारों प्रहरों में चार महापूजाएँ चमकम्, नमकम् और वेदसारशिवसहस्रनामावली के साथ समर्पित की गयीं जिनमें भगवान् का अभिषेक तथा अर्चना करने का प्रत्येक व्यक्ति को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हृदयस्पर्शी कीर्तन एवं शिव-महिमा का वर्णन करती हुई स्तुतियों का सम्पूर्ण रात्रि-भर किये गये गायन से सभी के हृदय अवर्णनीय आनन्द से भर गये। प्रातः ४ बजे मंगल आरती तथा अन्नपूर्णा भवन में पावन प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सदा-मंगलकारी भगवान् शिव और सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की भरपूर कृपावृष्टि सभी पर हो!

वर्ष २०२२–२३ में शैक्षिक–सहायता

प्रत्येक वर्ष निर्धन और ज़रूरतमन्द बच्चों को शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करना, मुख्यालय आश्रम के विविध सहायता कार्यों में से एक सेवा–कार्य है।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आश्रम द्वारा ऋषिकेश तथा अन्य निकटवर्ती गाँवों में रहने वाले समाज के असमर्थ वर्ग से सम्बन्धित विद्यार्थियों को शैक्षिक सहायता दी गयी। ऋषिकेश और इसके निकटवर्ती स्थानों के ६०४ विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पढ़ने वाले कुल ३४६४ छात्र तथा ५०५३ छात्राएँ इस शैक्षिक सहायता से लाभान्वित हुए। इन कुल ८५१७ लाभान्वित विद्यार्थियों में से ४००४ विद्यार्थी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक वर्ग के, ४१७४ माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग के, ३१० स्नातक वर्ग के तथा २९ स्नातकोत्तर वर्ग के छात्र थे। प्राथमिक वर्ग के प्रत्येक छात्र को न्यूनतम धनराशि ५००० रुपये तथा अधिकतम धनराशि ८००० रुपये प्रत्येक स्नातकोत्तर वर्ग के छात्र को देते हुए, कुल ४,७४,६६,००० रुपये (चार करोड़ चौहत्तर लाख छियासठ हजार) धनराशि वर्ष २०२२–२३ में शैक्षिक सहायता के रूप में प्रदान की गयी।

लाभान्वित बालकों के माता–पिता पर्वतीय क्षेत्रों से हैं और अधिकांश रूप में किसान वर्ग से एवं बी.पी.एल. श्रेणी के हैं। कस्बों से आने वाले छात्रों के माता–पिता अधिकांश रूप से रेहड़ी चलाने वाले, घरों में काम करने वाले, दिहाड़ी करने वाले श्रमिक इत्यादि छोटे–छोटे काम करने वाले हैं। इन विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय जाने की प्रेरणा देने के लिए तथा कुछ सीमा तक इनके शैक्षिक खर्चे में सहायता करने के उद्देश्य से आश्रम प्रत्येक वर्ष शैक्षिक सहायता की यह उदात्त सेवा कर रहा है।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की कृपावृष्टि सभी पर हो!

शिक्षा का आरम्भ बचपन से ही होना चाहिए। माँ की लोरी भी दिव्य एवं आत्म–प्रेरक होनी चाहिए जो बच्चों में निर्भयता, मुदिता, शान्ति, निःस्वार्थता और दिव्यता के स्वस्थ आदर्शों का संचार करे। भले ही बच्चा माँ के उन शब्दों के भाव हृदयंगम करने में असमर्थ हो; फिर भी माँ जिस बच्चे को अपने पूर्ण हृदय से प्रेम करती है, उसकी ओर वह एकाग्रचित्त से जो शक्तिशाली विचार प्रवाहित करती है, उसका गम्भीर प्रभाव उस बच्चे के मानसिक गठन पर तथा उसके भावी जीवन और आचार पर पड़ना अवश्यम्भावी है।

स्वामी शिवानन्द

कृपया सावधान रहें

द डिवाइन लाइफ सोसायटी के समस्त सदस्यों, भक्तों एवं शुभचिन्तकों की सूचनार्थ यह बताया जा रहा है कि कुछ धोखेबाज व्यक्तियों (Fraudsters) ने डिवाइन लाइफ सोसायटी की आधिकारिक (Official) वेबसाइट की नकल करते हुए एक वेबसाइट **https:// sivanandaashram.co.in/**, एवं ई मेल आई डी **info@ sivanandaashram.co.in** (फोन नं. ९६६८४६१५३८) बनायी है ताकि वे सामान्य जन को भ्रमित करके शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड में कमरे बुक करने और योग-कोर्स में नामांकन करने के नाम पर उनसे धन एकत्रित कर सकें।

जो भक्तजन सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं उनके पावन आश्रम के प्रति समर्पित हैं, वे भली-भाँति जानते हैं कि आश्रम में किसी भी प्रकार की सेवा के लिए कोई धनराशि नहीं ली जाती है तथा आश्रम अतिथियों एवं भक्तों को फोन अथवा व्हाटस ऐप (Whatsapp) के माध्यम से कमरे बुक करवाने अथवा योग-कोर्स में नामांकन करवाने की अनुमति नहीं देता है। इसलिए, आप सब ऐसी नकली वेबसाइट्स एवं ऐसे धोखेबाज व्यक्तियों से सावधान रहें।

कृपया इस बात का भी ध्यान रखें कि डिवाइन लाइफ सोसायटी की आधिकारिक (Official) वेबसाइट्स **https://www.sivanandaonline.org**. एवं **https://www.dlshq.org** हैं; ई मेल आई डी **generalsecretary@sivanandaonline.org** एवं **gs@sivanandaonline.org** हैं तथा ऑनलाइन डोनेशन पोर्टल **https://donations.sivanandaonline.org** है।

अहिंसा सर्वोत्तम धर्म है। मन, वचन तथा कर्म से अहिंसा का पालन करना चाहिए। अहिंसा को ही सबसे प्रथम रखा गया है; क्योंकि यह अन्य नौ (यम-नियम) का मूल है। विश्व-बन्धुत्व का अभ्यास अहिंसा का अभ्यास ही है। जो अहिंसा का अभ्यास करता है, वह योग में शीघ्र सफलता को प्राप्त करेगा। साधक को परुष वाणी तथा क्रूर दृष्टि का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए। उसे सबके प्रति शुभेच्छा रखनी चाहिए। उसे जीवन का आदर करना चाहिए। उसे सदा याद रखना चाहिए कि सभी भूतों में एक ही आत्मा का निवास है।

स्वामी शिवानन्द

ॐ

महत्त्वपूर्ण सूचना

योग–वेदान्त फॉरेस्ट अकादमी

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पी.ओ. शिवानन्दनगर—२४९१९२, जिला—टिहरी–गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

प्रवेश–सम्बन्धी सूचना

दिनांक **३–५–२०२३ से २५–६–२०२३** तक आयोजित ९७ वें द्विमासिक बेसिक योग–वेदान्त (आवासीय) कोर्स में प्रवेश लेने हेतु आवेदन–पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। यह कोर्स, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, शिवानन्दनगर, ऋषिकेश के अकादमी–परिसर में आयोजित किया जायेगा।

इस कोर्स से सम्बन्धित विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

१. इसमें केवल भारतीय नागरिक (पुरुष) ही भाग ले सकते हैं।

२. आयु–वर्ग : – २० और ६५ वर्ष के बीच

३. योग्यताएँ : –

(क) तीव्र आध्यात्मिक अभीप्सा तथा योग–वेदान्त के अभ्यास में गहन रुचि रखने वाले स्नातक उपाधिधारी पुरुषों को वरीयता दी जायेगी।

(ख) अभ्यर्थी में अँगरेजी भाषा में धाराप्रवाह वार्तालाप करने की क्षमता होनी चाहिए; क्योंकि शिक्षण का माध्यम अँगरेजी भाषा है।

(ग) अभ्यर्थी का स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए।

४. पाठ्यक्रम का विषय–क्षेत्र : –

(क) भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का रूपरेखीय अध्ययन, उपनिषदों का अध्ययन, धार्मिक चेतना का परिशीलन, श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन, पतंजलि की योग–प्रणाली, नारद–भक्तिसूत्र तथा स्वामी शिवानन्द के दर्शन (philosophy) का अध्ययन।

(ख) पाठ्यक्रम पूर्ण होने के उपरान्त परीक्षा आयोजित की जायेगी।

(ग) आसन, प्राणायाम, ध्यान, कर्मयोग, भाषण, समूह–चर्चा, प्रश्न–उत्तर सत्र भी इस कोर्स का अंग होंगे।

५. प्रशिक्षण, आवास तथा भोजन के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा। प्रतिदिन शुद्ध शाकाहारी भोजन (जलपान तथा दो बार भोजन) उपलब्ध कराया जायेगा। धूम्रपान, मद्यपान तथा नशीले पदार्थों का सेवन सर्वथा वर्जित है।

६. आवेदन–पत्र तथा विवरण–पत्रिका अकादमी के कुलसचिव से डाक द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं अथवा इन्हें हमारी वेबसाइट **www.sivanandaonline.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। अभ्यर्थी इस कोर्स में प्रवेश हेतु हमारी वेबसाइट **www.sivanandaonline.org** में दिये गये लिंक द्वारा ऑनलाइन आवेदन भी कर सकते हैं। भरे हुए आवेदन–पत्र अधोलिखित पदाधिकारी के पास **३१–३–२०२३** तक पहुँच जाने चाहिए।

७. योग–वेदान्त फॉरेस्ट अकादमी का उद्देश्य विद्यार्थियों को शैक्षिक–सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें इस योग्य भी बनाना है कि वे अपने व्यक्तित्व को पूर्ण तथा संघटित बना सकें तथा हितकारी एवं सफल जीवन व्यतीत कर सकें। अकादमी द्वारा संचालित किये जाने वाले कोर्स का स्वरूप विद्यार्थी को केवल शास्त्रीय ज्ञान अथवा पुस्तकीय जानकारी प्रदान करने की अपेक्षा अनुशासनात्मक अधिक है।

शिवानन्दनगर
फरवरी, २०२३

कुलसचिव (रजिस्ट्रार)
योग–वेदान्त फॉरेस्ट अकादमी
फोन : – ०१३५–२४३३५४१ (अकादमी)
ईमेल : – yvfacademy@gmail.com

डोनेशन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सूचना

प्रशासनिक कारणों तथा वर्तमान अकाउण्टिंग व्यवस्था (Accounting System) को थोड़ा सरल बनाने के उद्देश्य से, १० मार्च २०२१ को आयोजित 'बोर्ड ऑफ मैनेजमेण्ट' मीटिंग एवं ११ मार्च २०२१ को आयोजित 'बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज' मीटिंग में यह निर्णय लिया गया है कि द डिवाइन लाइफ सोसायटी के लिए भेजे जाने वाले डोनेशन दिनांक १ अप्रैल २०२१ से केवल निम्नलिखित अकाउण्टस हेड्स हेतु ही स्वीकार किये जायेंगे—

जनरल डोनेशन

(१) आश्रम जनरल डोनेशन

(२) अन्नक्षेत्र

(३) मेडिकल रिलीफ

कॉरपस डोनेशन

शिवानन्द आश्रम कॉरपस (मूलधन) फण्ड

अत: भक्तवृन्द से अनुरोध है कि वे केवल उपर्युक्त अकाउण्टस हेड्स हेतु ही डोनेशन भेजें।

आश्रम के भक्त एवं हितैषी जनों को यह भी सूचित किया जाता है कि

- 'आश्रम जनरल डोनेशन' में प्राप्त धनराशि का उपयोग द डिवाइन लाइफ सोसायटी की समस्त धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा-सम्बन्धी गतिविधियों हेतु किया जायेगा यथा शिवानन्द होम द्वारा गृहविहीन-निराश्रितों की देखभाल, लेप्रसी रिलीफ वर्क द्वारा कुष्ठरोगियों की सेवा, निर्धन छात्रों को शैक्षिक सहायता, योग-वेदान्त फॉरेस्ट अकादमी का संचालन, नि:शुल्क वितरणार्थ आध्यात्मिक पुस्तकों का मुद्रण, आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार, आश्रम-मन्दिरों में पूजा-अर्चना, आश्रम एवं गौशाला का रख-रखाव तथा आश्रम की नियमित धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों का संचालन। इस धनराशि का उपयोग सोसायटी द्वारा समय-समय पर आयोजित अन्य विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा-सम्बन्धी कार्यक्रमों हेतु भी किया जायेगा।
- 'मेडिकल रिलीफ' के अन्तर्गत प्राप्त डोनेशन का उपयोग शिवानन्द चैरिटेबल हॉस्पिटल में जरूरतमन्द रोगियों के उपचार हेतु तथा सोसायटी द्वारा संचालित अन्य चिकित्सा-सम्बन्धी कार्यक्रमों हेतु किया जायेगा।
- इसी प्रकार 'शिवानन्द आश्रम कॉरपस (मूलधन) फण्ड' से प्राप्त ब्याज की राशि का सदुपयोग सोसायटी की समस्त गतिविधियों (धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा-सम्बन्धी) हेतु किया जायेगा।
- इस सम्बन्ध में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि सोसायटी अपनी किसी गतिविधि को समाप्त नहीं कर रही है। सोसायटी की सभी आश्रम-सम्बन्धी एवं सेवा-सम्बन्धी गतिविधियाँ पूर्ववत् चलती रहेंगी; यद्यपि डोनेशन स्वीकार करने हेतु अकाउण्टस हेड्स की संख्या कम कर दी गयी है।

- द डिवाइन लाइफ सोसायटी के लिए डोनेशन 'ऑनलाइन डोनेशन सुविधा' द्वारा वेब एड्रेस **https://donations.sivanandaonline.org** के माध्यम से अथवा हमारी वेबसाइट **www.sivanandaonline.org** में दिये गये 'ऑनलाइन डोनेशन' लिंक के माध्यम से भेजा जा सकता है।
- डोनेशन ऋषिकेश में देय बैंकड्राफ्ट अथवा चेक अथवा इलेक्ट्रानिक मनीआर्डर (E.M.O.) द्वारा "The Divine Life Society", Shivanandanagar, Uttarakhand के नाम भी भेजा जा सकता है। कृपया ड्राफ्ट अथवा चेक अथवा ई. एम. ओ. के साथ एक पत्र में डोनेशन का उद्देश्य, अपना डाक पता, फोन नम्बर, ई मेल आई डी तथा पैन नम्बर लिख कर भेजें।
- भक्तवृन्द को यह भी सूचित किया जाता है कि आश्रम-मन्दिरों में पूजा-अर्चना करवाने हेतु कोई धनराशि नहीं ली जायेगी। जो व्यक्ति अपने अथवा अपने परिवार के किसी सदस्य के नाम पर पूजा करवाना चाहते हैं, वे इस सम्बन्ध में आश्रम के महासचिव अथवा परमाध्यक्ष को आवश्यक विवरण के साथ एक अनुरोध-पत्र ई मेल अथवा डाक द्वारा भेज सकते हैं जिससे कि उनके नाम पर पूजा सम्पन्न हो सके।
- सोसायटी को भेजे जाने वाले सदस्यता शुल्क, प्रवेश शुल्क, आजीवन सदस्यता शुल्क, पैट्रनशिप शुल्क, शाखा-सम्बद्धता शुल्क एवं एस पी एल को भेजी जाने वाली अग्रिम धनराशि से सम्बन्धित प्रावधानों एवं निर्देशों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१.	नवीन सदस्यता-शुल्क*		₹ १५०/-
	प्रवेश-शुल्क	₹ ५०/-	
	सदस्यता-शुल्क	₹ १००/-	
२.	सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक)		₹ १००/-
३.	नयी शाखा खोलने का शुल्क**		₹ १०००/-
	प्रवेश-शुल्क	₹ ५००/-	
	सम्बद्धता-शुल्क	₹ ५००/-	
४.	शाखा-सम्बद्धता नवीकरण शुल्क (वार्षिक)		₹ ५००/-

* सदस्यता के इच्छुक प्रार्थी कृपया प्रार्थना-पत्र के साथ अपना फोटो पहचान-पत्र (Photo Identity) तथा निवास-स्थान के प्रमाण-स्वरूप कोई दस्तावेज (Residential Proof) भेजें।

**नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

⇨ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट अथवा चेक द्वारा भेजें।

डी एल एस शाखाओं के प्रतिवेदन

भारतीय शाखाएँ

काकचिंग (मणिपुर): शाखा द्वारा रुद्री पाठ, शिवमहिम्नस्तोत्र सहित दैनिक पूजा, सोमवारों को शिवाभिषेक, गुरुवारों को पादुका पूजा के कार्यक्रम यथावत् चलते रहे। ८ जनवरी को मासिक सत्संग कीर्तन और भजन के साथ किया गया। २६ को एक भक्त के आवास पर विशेष सत्संग आयोजित किया गया।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा सोमवार और शनिवार को भगवद्गीता पर प्रवचनों सहित साप्ताहिक सत्संग, ४ दिसम्बर को गीता पारायण सहित गीता जयन्ती मनायी गयी। ११ को जप, ध्यान, भजन और कीर्तन सहित मासिक सत्संग आयोजित किया गया।

खातिगुडा (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा और साप्ताहिक सत्संग गुरुवारों को चलते रहे। १ जनवरी साधना दिवस मनाया गया। एकादशियों को विष्णुसहस्रनाम पारायण किया गया।

चाँदपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग शनिवार को, सुन्दरकाण्ड पारायण संक्रान्ति दिनों को, चल सत्संग ८ और २४ को किये जाते रहे। विशेष सत्संग १६ जनवरी को आयोजित किया गया।

जमशेदपुर (झारखण्ड): शाखा द्वारा शुक्रवारों को साप्ताहिक सत्संग तथा अन्त्योदय बस्ती के बालकों के लिए निःशुल्क योग कक्षाएँ एवं चित्रकारी कक्षाएँ चलती रहीं। १ जनवरी को नव वर्ष मनाया गया। २६ को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आगमन की स्मृति में विशेष सत्संग आयोजित किया गया। १४ को मकर संक्रान्ति मनायी गयी।

पंचकूला (हरियाणा): ८ जनवरी को 'सिविल हॉस्पिटल' में नारायण सेवा की गयी और २४ को गोशाला में गायों को हरा चारा खिलाया गया। साप्ताहिक सत्संग रविवारों को भक्तों के आवास पर स्वाध्याय, भजन और विश्व-कल्याण हेतु प्रार्थना सहित पूर्ववत् चलते रहे।

पत्तमडै (तमिलनाडु): शाखा द्वारा प्रत्येक ८ को पादुका पूजा की जाती रही। २८ को विशेष सत्संग तिरुवासकम् पारायण सहित किया गया तथा ४०० पुस्तकें तमिलनाडु की समस्त डीएलएस शाखाओं में वितरित की गयीं।

पुरी (ओडिशा): दैनिक पादुका पूजा, गुरुवारों और रविवारों को साप्ताहिक सत्संग, ८ एवं २४ को विशेष सत्संग, एकादशियों को गीता पाठ तथा संक्रान्ति को हनुमान चालीसा पाठ के कार्यक्रम शाखा द्वारा यथावत् चलते रहे। ४ दिसम्बर को गीता जयन्ती तथा शाखा स्थापना दिवस हवन सहित मनाया गया।

फरीदपुर शाखा (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा प्रत्येक बुधवार को साप्ताहिक सत्संग तथा पादुका पूजा सहित मासिक सत्संग किये जाते रहे। मुख्यालय आश्रम में पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की पावन पुण्यतिथि पर शाखा द्वारा अखण्ड श्री रामचरितमानस पाठ किया गया। शाखा के भवन में भी पादुका पूजा तथा भण्डारे का आयोजन तथा गोरखपुर में रामायण पाठ एवं पादुका पूजा का कार्यक्रम किया गया।

बढ़ियाउस्ता-गंजाम (ओडिशा): शाखा द्वारा ५ जनवरी को प्रार्थना, योगासन, पादुका पूजा और नाम संकीर्तन के साथ विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम किया गया। सायंकाल में डीएलएस मुख्यालय आश्रम के श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी द्वारा विशेष सत्संग संचालित किया गया।

बरगढ़ (ओडिशा): शाखा द्वारा दिसम्बर-जनवरी

मास में दैनिक पूजा, सोमवारों को रुद्राभिषेक, योग एवं प्राणायाम की कक्षाएँ, गुरुवारों को गुरु पादुका पूजा, शनिवारों को साप्ताहिक सत्संग तथा रविवारों को गीता पर विचार-विनिमय के साथ सत्संग किये जाते रहे। इसके साथ-साथ रोगियों की होमियोपैथी द्वारा धर्मार्थ चिकित्सा की जाती रही। १ जनवरी को नया वर्ष रुद्राभिषेक, पादुका पूजा, भजन और कीर्तन सहित मनाया गया। १९ से २५ तक श्रीमद्भागवत सप्ताह रखा गया तथा २६ को शाखा का वार्षिक दिवस और श्री विश्वनाथ मन्दिर का प्रतिष्ठा दिवस मनाया गया।

बरबिल (ओडिशा): शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग गुरुवारों को तथा चल सत्संग सोमवारों को होते रहे। शिवानन्द धर्मार्थ होमियो डिस्पेंसरी द्वारा ३०५ रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गयी। २४ जनवरी को पादुका पूजा सहित साधना दिवस मनाया गया।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, शनिवारों को सुन्दरकाण्ड, हनुमान चालीसा और महामन्त्र संकीर्तन सहित सत्संग चलते रहे। अमावास्या को हवन तथा जरूरतमन्दों को वस्त्र एवं अन्न वितरण के कार्यक्रम भी चलते रहे। इसके अतिरिक्त डीएलएस मुख्यालय, ऋषिकेश की श्री स्वामी चित्निष्ठानन्द माता जी द्वारा महामन्त्र जप और श्रीमद्भगवद्गीता पाठ सहित नियमित सत्संग आयोजित किये गये। १ से ५ जनवरी तक शाखा द्वारा प्रवचन, भजन और कीर्तन सहित विशेष सत्संग आयोजित किये गये जिनका संचालन डीएलएस मुख्यालय आश्रम के श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज द्वारा किया गया।

भीमकांड (ओडिशा) : शाखा द्वारा दैनिक पादुका पूजा और रविवारों को साप्ताहिक सत्संग किये जाते रहे।

भुवनेश्वर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा और नारायण सेवा, गुरुवारों को साप्ताहिक सत्संग, सप्ताह में चार दिन निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा, ४ दिसम्बर और ३, २२ तथा २९ जनवरी को चल सत्संग किये गये। १८-१९ को विशेष सत्संग किये गये तथा २५ से २७ दिसम्बर तक तीन-दिवसीय युवा शिविर आयोजित किया गया। १ जनवरी को नव वर्ष मनाया गया। ७ जनवरी को पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि मनायी गयी। शाखा द्वारा प्रत्येक २४ को 'श्री राम जय राम जय जय राम' मन्त्र का जप किया जाता रहा तथा ३१ को हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।

राउरकेला (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक योग कक्षाएँ, पादुका पूजा, भजन-कीर्तन, अर्चना और विष्णुसहस्रनाम सहित गुरुवारों और रविवारों को सत्संग इत्यादि के कार्यक्रम चलते रहे। निःशुल्क ऐक्युप्रेशर चिकित्सा एवं औषधियाँ जरूरतमन्द लोगों को पूर्ववत् दी जाती रहीं। २२ और २९ जनवरी को विशेष सत्संग आयोजित किये गये। १ जनवरी को नव वर्ष मनाया गया। तथा डीएलएस मुख्यालय आश्रम से श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी महाराज ने उपस्थित भक्तों को आशीर्वचन दिये।

सम्बलपुर (ओडिशा): दैनिक पूजा, रविवार को साप्ताहिक सत्संग, द्वितीय शनिवार को सुन्दरकाण्ड पारायण और प्रत्येक ८ और २४ को पादुका पूजा के कार्यक्रम यथावत् चलते रहे। ८ जनवरी को एक-दिवसीय साधन शिविर पादुका पूजा, विष्णुसहस्रनाम पाठ, महामन्त्र जप और प्रवचन इत्यादि सहित आयोजित किया गया।

साउथ बलाण्डा (ओडिशा): शाखा द्वारा दिसम्बर और जनवरी मास में दैनिक पूजा, प्रत्येक शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, ८ एवं २४ को पादुका पूजा आदि की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। गीता पाठ, विष्णुसहस्रनाम पाठ और हनुमान चालीसा पाठ एकादशियों को किया जाता रहा। १७ दिसम्बर और ३ जनवरी को अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन तथा १४ जनवरी को विशेष सत्संग आयोजित किया गया।

हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों की नवीनतम सूची

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज कृत

अच्छी नींद कैसे सोयें	₹ ७०/-
अध्यात्मविद्या	U.P.
कर्म और रोग	२५/-
कर्मयोग-साधना	१३०/-
गीता-प्रबोधिनी	५५/-
गुरु-तत्त्व	५५/-
घरेलू चिकित्सा	U.P.
जपयोग	१२०/-
जीवन में सफलता के रहस्य	१८५/-
ज्योति, शक्ति और प्रज्ञा	४०/-
दिव्योपदेश	४०/-
देवी माहात्म्य	११५/-
धनवान् कैसे बनें	५०/-
धारणा और ध्यान	२१०/-
ध्यानयोग	१३०/-
प्राणायाम-साधना	७५/-
बालकों के लिए दिव्य जीवन सन्देश	१००/-
ब्रह्मचर्य-साधना	११०/-
भगवान् शिव और उनकी आराधना	१५०/-
भगवान् श्रीकृष्ण	१३०/-
मन : रहस्य और निग्रह	२०५/-
मरणोत्तर जीवन और पुनर्जन्म	१३५/-
मानसिक शक्ति	१३०/-
मूर्तिपूजा का दर्शन और महत्त्व	३०/-
मैं इसका उत्तर दूँ?	१३०/-
श्रीमद्भगवद्गीता	४२५/-
योगाभ्यास का मूलाधार	U.P.
योगवासिष्ठ की कथाएँ	९०/-
योगासन	११५/-
विद्यार्थी-जीवन में सफलता	६०/-
शिवानन्द-आत्मकथा	१२०/-
सत्संग भजन माला	₹ १६०/-
सत्संग और स्वाध्याय	६०/-
सद्गुणों का अर्जन एवं दुर्गुणों का नाश किस प्रकार करें	१९५/-
सन्त-चरित्र	२३५/-
सौ वर्ष कैसे जियें	९५/-
साधना	U.P.
स्वरयोग	८०/-
हठयोग	१००/-
हिन्दूतत्त्व-विवेचन	१६०/-

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज कृत

अध्यात्म-प्रसून	३५/-
आलोक-पुंज	१०५/-
ज्योति-पथ की ओर	१२५/-
त्याग : शरणागति	२५/-
भगवान् का मातृरूप	७०/-
मोक्ष सम्भव है	३५/-
योग-सन्दर्शिका	५५/-
शाश्वत सन्देश	५५/-
शोकातीत पथ	१४०/-
साधना सार	३५/-

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज कृत

नित्य वन्दना	४५/-

अन्य लेखक कृत

एकादशोपनिषदः (मूल मन्त्राः)	१४०/-
गुरुदेव कुटीर में भजन-कीर्तन	५०/-
*चिदानन्दम्	२००/-
जीवन-स्रोत	१५०/-
शारीरकमीमांसादर्शनम्	१५/-
शिव स्तोत्र माला	३५/-
श्रीमद्भगवद्गीता (मूलमात्रम्)	१००/-
*सर्वस्नेही हृदय	१००/-
दिव्य योगा	९०/-

५०% अग्रिम। पैकिंग अतिरिक्त । विस्तृत जानकारी के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें :

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पत्रालय : शिवानन्दनगर—२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

फोन : ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail : bookstore@sivanandaonline.org

For online orders and Catalogue : dlsbooks.org

NEW EDITION

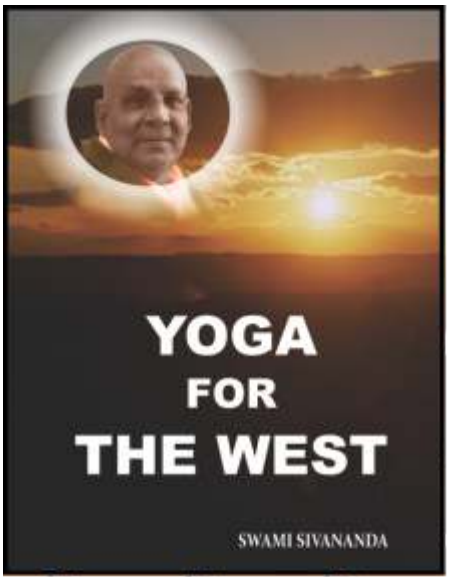

YOGA FOR THE WEST

Pages: 96 **Price: ₹ 55/-**

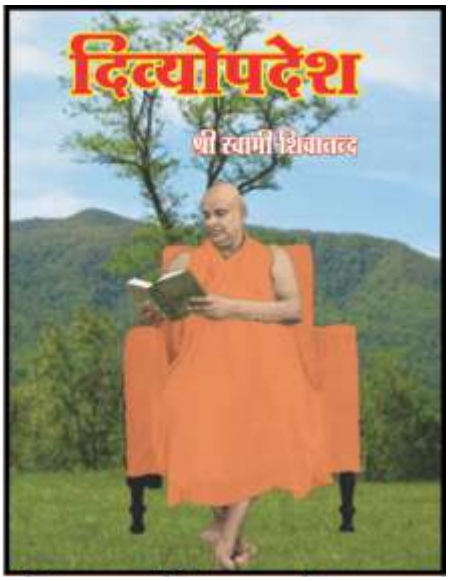

दिव्योपदेश

Pages: 64 **Price: ₹ 40/-**

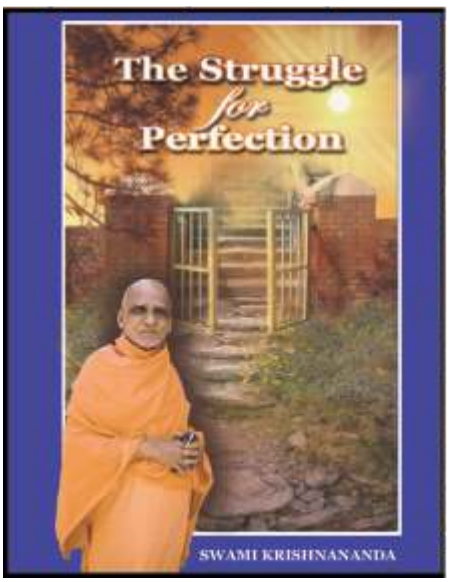

THE STRUGGLE FOR PERFECTION

Pages: 64 **Price: ₹ 40/-**

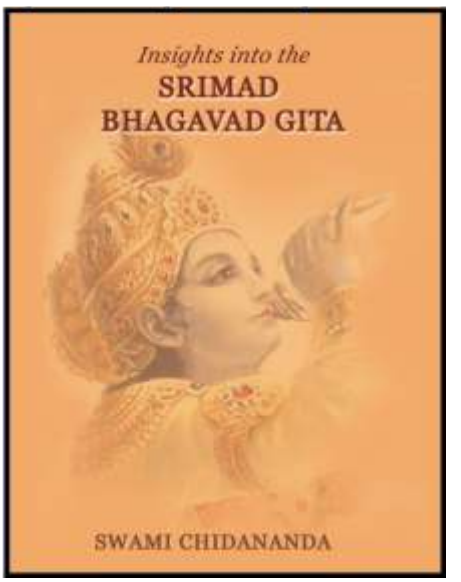

INSIGHTS INTO THE SRIMAD BHAGAVAD GITA

Pages: 208 **Price: ₹ 180/-**

Statement about ownership and other particulars about newspaper "Divya Jeevan"

FORM IV

1. Place of publication:	Yoga Vedanta Forest Academy Press, Shivanandanagar, Uttarakhand
2. Periodicity of its publication:	Monthly
3. Printer's Name: Nationality: Address:	Swami Advaitananda Indian The Divine Life Society, P.O. Shivanandanagar-249 192, Dt. Tehri Garhwal, Uttarakhand, India
4. Publisher's Name: Nationality: Address:	Swami Advaitananda Indian The Divine Life Society, P.O. Shivanandanagar-249 192, Dt. Tehri Garhwal, Uttarakhand, India
5. Editor's Name: Nationality: Address:	Swami Nirliptananda Indian The Divine Life Society, P.O. Shivanandanagar-249 192, Dt. Tehri Garhwal, Uttarakhand, India
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one per cent of the total capital:	The Divine Life Trust Society, P.O. Shivanandanagar-249 192, Dt. Tehri Garhwal, Uttarakhand, India

I, Swami Advaitananda, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Swami Advaitananda
Publisher

Date: 1st March 2023

Registrar of Newspapers for India
No. 71610/1999

Postal-Registration No. TRI/005/2021-23

मार्च २०२३

LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
(Licence No. WPP No. 02/21-23, Valid upto: 31-12-2023)
DATE OF PUBLICATION: 20th OF EVERY MONTH
DATE OF POSTING: 20th OF EVERY MONTH
Posted at Shivanandanagar, Tehri-Garhwal, Uttarakhand

भगवान् के गुण

यह शरीर एक जटिल यन्त्र है। इस शरीर के विभिन्न अंगों के काम को प्रख्यात वैद्य-चिकित्सक लोग भी समझ नहीं पाये। तीस साल पहले तक भी उनको यह मालूम नहीं था कि शरीर के अन्दर विभिन्न अन्तःस्रावी ग्रन्थियों (Endocrine Glands) का क्या काम है। अब वे कहने लगे हैं कि प्रकृति की व्यवस्था में उन ग्रन्थियों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस शरीर-रूपी जटिल यन्त्र के काम और गुण-धर्मों की जाँच-पड़ताल और अध्ययन अभी तक चल रहा है। जब आप इस यन्त्र के चालक को समझ पायेंगे, तभी इस मानव-यन्त्र को भी पूरी तरह समझ सकेंगे। वह चालक स्वयं अन्तर्यामी भगवान् हैं।

परमेश्वर सत्य हैं। वे सत्य वस्तु हैं। वे सत्यम्, नित्यम्, अविनाशी, निर्विकार, एकरस हैं। वे स्वयम्भू हैं, स्वयं-प्रकाश हैं और सर्वदा स्वतन्त्र हैं। वे अनादि, अनन्त हैं। वे भूत, वर्तमान और भविष्य में स्थित हैं। वे चित्, संवित्, विज्ञान और प्रज्ञान हैं। वे कारणरहित हैं, देशकालातीत हैं। वे एक हैं, अखण्ड हैं और अपरिच्छिन्न हैं।

भगवान् और 'शान्ति' पर्यायवाची शब्द हैं। जो कामना-रहित है, क्रोध-मुक्त है, लोभ-शून्य हैं और निरहंकारी है, भगवान् उनके अति-निकट हैं।

परमेश्वर स्वयं निष्काम हैं, परिपूर्ण हैं। अपनी लीला के हेतु वे इस संसार की सृष्टि करते हैं। यह उनका स्वभाव है।

स्वामी शिवानन्द

सेवा में

'द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी' की ओर से स्वामी अद्वैतानन्द द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२' से मुद्रित तथा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्य कार्यालय, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२' से प्रकाशित। फोन : ०१३५-२४३००४०, २४३११९०
E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org ; Website : www.sivanandaonline.org ; www.dlshq.org
सम्पादक : स्वामी निर्लिप्तानन्द